ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

अग्रहायण २०७४ नवम्बर २०१७

बाल दिवस

₹ २०

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

अग्रहायण २०७४ ▪ वर्ष ३८
नवम्बर २०१७ ▪ अंक ५

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या -53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इन दिनों 'स्वच्छता' शब्द हमारे कानों में किसी धर्मवाणी की तरह प्रवेश करता है। जहाँ देखो इसी की चर्चा। हर और प्रचार, दीवार लेखन, विज्ञापन, दूरदर्शन की वाहिनियों (चेनल्स) पर इसी के दर्शन हो रहे हैं। नए माध्यमों यानी फेसबुक, व्हाट्स एप्प पर भी छोटे-छोटे वीडियो इस विषय पर देखने को मिलते हैं।

पिछले दिनों इन्दौर में एक 'शॉर्ट फिल्म फेस्टीवल' सम्पन्न हुआ। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा उसमें ६० प्रतिशत फिल्में इसी स्वच्छता विषय पर केन्द्रित थीं। मुझे इन सब माध्यमों के अवलोकन के बाद एक बात सबसे अच्छी लगी चाहे छपे विज्ञापन हों या दूरदर्शन के, फेसबुक हो व्हाट्स एप्प के वीडियों हो चाहे वो हों शार्ट फिल्में, इन सबमें स्वच्छता का पाठ बड़ों-बड़ों को सिखाते दिखाई देते हैं, छोटे-छोटे बच्चे।

अब तक बाल -पात्र अपने बड़ों को किसी ब्राण्ड विशेष का टीवी, फ्रिज, लेपटॉप, मोबाईल, एसी आदि खरीदने का आग्रह करते दिखाई देते थे विज्ञापनों में परन्तु यह स्वच्छता अभियान की सबसे बड़ी देन है कि इसने आप सबको अब समाज और राष्ट्र के प्रति संवेदनापूर्ण सोच रखने वाला नागरिक दिखाना प्रारंभ कर दिया है सचमुच आपके अन्दर छिपी इस राष्ट्रीय चेतना को थोड़े से प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। अपने प्रधानमंत्री जी ठीक ही कहते हैं-''इस देश का हर बच्चा स्वच्छता अभियान का 'ब्राण्ड एम्बेसेडर' है।''

आप सबको इस नई भूमिका की ढेर सारी बधाइयाँ। ईश्वर आपको शक्ति दें कि आप अपने सब परिजनों और इष्ट मित्रों को अपना देश- अपना आँगन स्वच्छ रखने की प्रेरणा दे सकें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- मस्ती - डॉ. भगवती प्रसाद द्विवेदी ०५
- नानक जी का जन्मदिन - डॉ. सेवा नन्दवाल १५
- निशानेबाज - सुधा भार्गव २१
- धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे - कमलाप्रसाद चौरसिया २४
- हाथ की करामात - शंकरलाल माहेश्वरी ४१
- एक नई बात - पूनम पाण्डे ४५

पत्र

- तू प्यार का सागर है - दिलीप भाटिया १३

आलेख

- जंगल में नाचा मोर - डॉ. बानो सरताज १८

प्रसंग

- संस्कार - हरनारायण महाराज ०९

नाटक

- दादी का जादू - डॉ. नीलम राकेश ०९

कविता

- फूल - डॉ. चक्रधर 'नलिन' ०७
- गदहे की बारात - शुभदा पाण्डेय २२
- अच्छा नहीं सुनो... - कृष्ण 'शलभ' २३
- गोलू मोलू - मृदुल कुमार सिंह २३
- हँसती सृष्टि फूलों सी - डॉ. सतीशचंद्र भगत २७
- दिन सुहाने... - अशोक 'आनन' २९
- गाँव के बच्चे - रामशंकर 'चंचल' ३३
- शिशु गीत - अनन्तप्रसाद 'रामभरोसे' ३८
- चुनकर तारे लाऊं -राजीव कुमार त्रिगर्ती ४२
- चुहिया की बिदाई - डॉ. कैलाश 'सुमन' ४३
- मोबाईल का ठसका - ओम उपाध्याय ५०

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की (१०) - ३०
- कामरूप के संत... डॉ. देवेनचंद्र दास 'सुदामा' ३७
- पुस्तक परिचय - ४०
- आपकी पाती - ४८

बाल प्रस्तुति

- बन्दर आया - महेन्द्र कुमार देवांगन ०६
- दिमागी कसरत - शांतनु श्रीवास्तव ०९
- हमारा पहाड़ - गौरव कर्मा १७
- देवदूत - सुप्रिया गौतम ३५
- दोस्तों की पहल - नवीन कुमार जैन ३९
- चलो चांद पर - आयुष शुक्ला ४६
- प्यारी माँ - कृष्णगोपाल सिंह ठाकुर ४८

एवं अन्य मनोरंजन सामग्री

मस्ती

कहानी : डॉ.भगवती प्रसाद द्विवेदी

उठना नहीं है क्या! माँ ने झिड़की दी, ''चलो, तैयार हो जाओ।''

''माँ, तुम भी न!'' मैं मन ही मन नाराज हो गया। मुझे बहुत बुरा लगा। मेरा मीठा सपना जो टूट गया था। माँ ने इतनी सुबह मुझे जगा दिया। धत् तेरे की।

कुनमुनाते हुए मैं आँगन में आ गया। आँगन में कई चिड़ियाँ चहक रही थीं। गौरेया, मैना, कबूतर...। चिड़ियाँ फुदकते हुए दाने चुग रही थीं। मैं ताली बजाते हुए उनकी ओर दौड़ा। सभी चिड़ियाँ फुर्र से उड़ गईं। मुझे बहुत मजा आया।

नहा–धोकर मैं बाहर आ गया। जल्दी–जल्दी माँ ने मुझे तैयार किया। मैं बस्ता लेकर निकल पड़ा।

अब मैं बाहर बगीचे में आया। वहाँ गेंदे के फूलों के साथ तितलियाँ आँख मिचौली का खेल खेल रही थीं। की इस फूल पर, तो कभी उस फूल पर। मैं भागा उनके पीछे। पीछे–पीछे मेरा मोती भी। वे सभी आसमान की ओर उड़ चलीं। उनको उड़ान भरते हुए देखकर मुझे बहुत मजा आया।

मैं गुनगुनाते हुए आगे बढ़ा। सड़क के किनारे एक मदारी जा रहा था। कंधे पर बंदरिया थी और पीछे–पीछे भालू। वाह! कितना मजेदार होगा बंदरिया और भालू का नाच। मगर यह क्या! मदारी तो एक गली में मुड़ गया। कुछ देर तक रुककर मैं भालू और बंदरिया को जाते हुए देखता रहा। उन्हें देखकर बहुत मजा आया।

आगे कुछ लोग एक साँड को खदेड़ रहे थे। कुछ लड़के लाल कपड़ा दिखा रहे थे। साँड़ भागा जा रहा था या लाल कपड़े से भड़क कर? क्या लाल कपड़े से

साँड डरता है? डरपोक कहीं का।

लड़कों के साथ मैं भी साँड के पीछे दौड़ा। बहुत मजा आया।

अचानक कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनाई पड़ी। पीछे मुड़कर देखा तो दंग रह गया। मेरा मोती मेरे पीछे-पीछे चला आ रहा था। कुछ कुत्ते मोती पर भौंक रहे थे। मैंने आव देखा न ताव! दे मारा एक ढेला। कुत्ते हो गए रफ्फू चक्कर! उन्हें दुम दबाकर भागते देख मुझे बहुत मजा आया।

मगर हाय री मेरी किस्मत! मेरा ढेला जा रहा था मधुमक्खी के छत्ते पर। फिर क्या था। मधुमक्खियाँ मेरे पीछे पड़ गईं। मैं सर पर पाँव रखकर भागा। डरते हुए जा घुसा एक घर में।

लेकिन वहाँ का नजारा तो कुछ और ही था। रंग-बिरंगी किताबें सजी थीं। किसिम-किसिम के चित्रों वाली किताबें। हाथी को पटखनी देती बकरी। शेर को ललकारता गीदड़। ऊँट के ब्याह में बाराती बने गधे, भालू, तोते। मैंने चित्रों वाली एक किताब उठाई। उसमें तरह-तरह के मजेदार चित्र देखकर मुझे बहुत मजा आया।

मोती भी कभी मुझको और कभी चित्रों को देखकर मजा ले रहा था।

टन-टन-टन-टन! शाला की घंटी लगातार बज रही थी। मेरी घिग्घी बँध गई। मैं दनादन दौड़ा शाला की ओर।

कक्षा में दाखिल होकर मैंने राहत की साँस ली। शिक्षिका एक मजेदार कहानी सुना रही थीं। कहानी सुनकर मुझे खूब हँसी आई।

मैं मन ही मन सोच रहा था। वाह! कितना मजेदार है सुबह उठाना और शाला जाकर मस्ती करना।

● मीठापुर (बिहार)

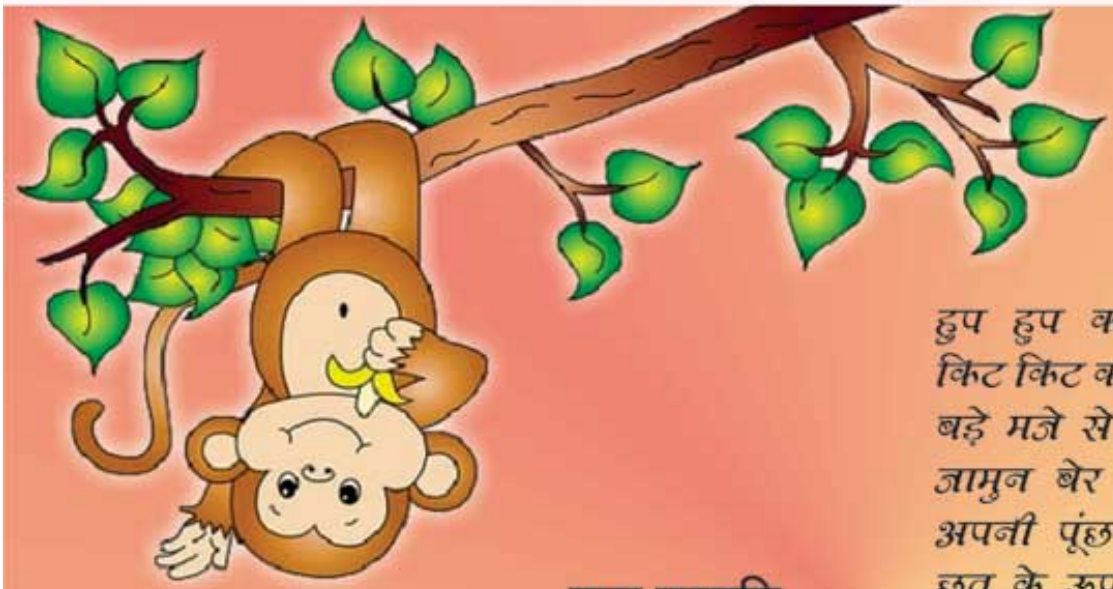

बाल प्रस्तुति

बंदर आया

कविता : महेन्द्र कुमार देवांगन

हुप हुप करते बंदर आता
किट किट करके दांत दिखाता
बड़े मजे से आम को खाता
जामुन बेर है उसको भाता
अपनी पूंछ उठाकर चलता
छत के ऊपर कसरत करता
इधर-उधर वह दौड़ लगाता
बच्चों के मन को बहलाता

● गरियाबंद (छ.ग.)

फूल

कविता : डॉ. चक्रधर नलिन

सबको आकर्षित करते हैं
रंग-बिरंगे सुन्दर फूल।
आस-पास सुरभित करते हैं।
सुख देते हैं अच्छे फूल।

हरी, भरी-बगिया में खिलते,
नये रूप, रंगों में मिलते,
मन को देते हैं प्रसन्नता
मस्त हवा के झोंके झूल।

तितली इन पर है इठलाती,
जी भर अपना मन बहलाती,
भँवरे इनको गान सुनाते
कभी नहीं बनते हैं शूल।

महकाते हैं सबके आंगन,
सुन्दर कर देते घर, उपवन,
देख पथिक इनको ललचाते
पथ पर चलना जाते भूल।

पुष्पों सा सुगन्ध फैलायें,
सुमन माल सब गले लगायें,
जीवन हो सुन्दर फूलों-सा
इन पर पहुँच न पाती धूल।

● लखनऊ (उ.प्र.)

पैनी नजर

१

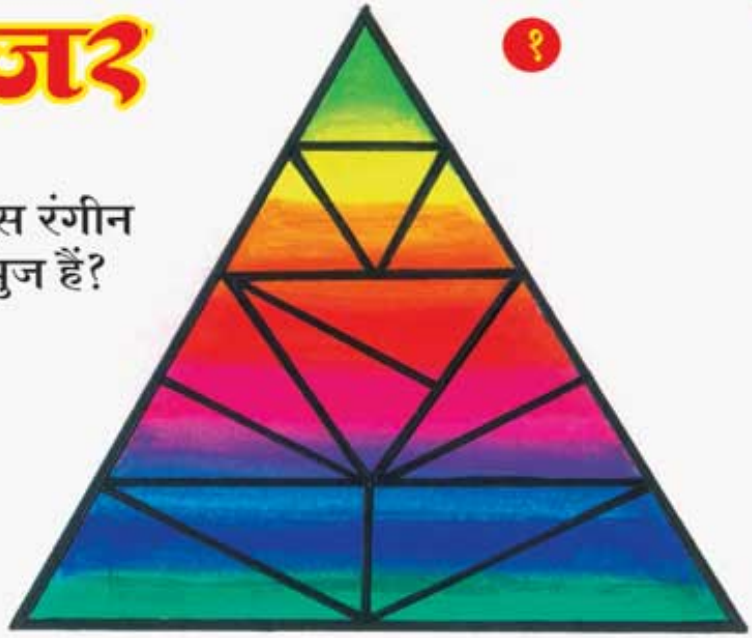

बच्चों, ध्यान से बताओं इस रंगीन त्रिभुज में कुल कितने त्रिभुज हैं?

● राजेश गुजर

२

नीचे बनी ६ आकृतियों में २ बिल्कुल एक जैसी है, ढूंढो तो जरा?

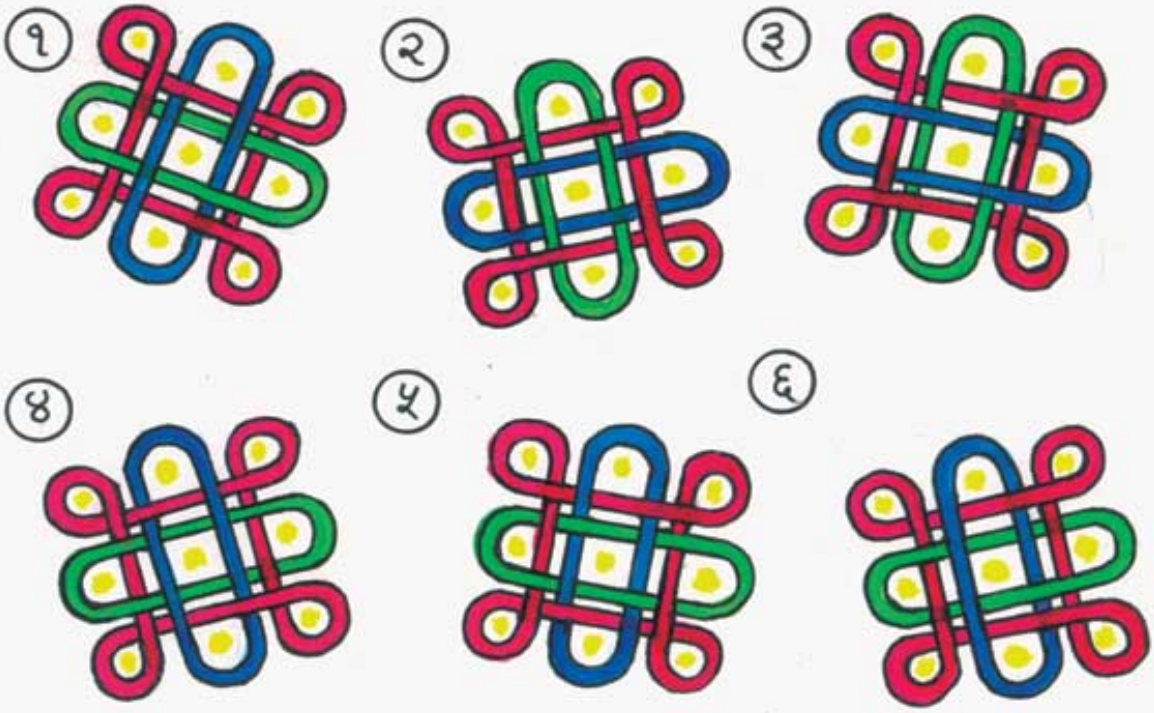

(उत्तर इसी अंक में।)

संस्कार

प्रसंग : हरनारायण महाराज

नेहरू जी को बचपन में यह जानने की उत्सुकता रहा करती थी, कि बड़े लोग आपस में क्या बातें करते हैं। एक दिन वह चुपचाप बड़ों की महफिल में बातें सुन रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि उनके पिता एक गिलास में लाल रंग की कोई चीज पी रहे हैं। उस लाल रंग को उन्होंने खून समझा। वे एकदम घबरा गए। दौड़े-दौड़े माँ के पास पहुँचे और तेज-तेज सांस लेते हुए बोले, ''माँ! माँ!! पिताजी खून पी रहे हैं।''

नन्हे बालक की बात सुनकर माँ ने उसे दुलार से गले लगा लिया। वे सारा माजरा समझ गईं।

उन्होंने जब यह बात मोतीलाल नेहरू को सुनाई तो वह सोच में पड़ गए। विचार करने लगे- ''बच्चों के लिए सबसे पहली और सबसे बड़ी पाठशाला उनका घर होता है तथा सबसे बड़े आदर्श उनके माता-पिता होते हैं। बच्चों में अनुकरण करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। उनके कोमल मन पर माता-पिता के आचरण की अमिट छाप पड़ती है। अतः हम जवाहर को जैसा बनना चाहते हैं वैसा हमें स्वयं बनना चाहिए। बनना ही बनाना है। बनकर ही बनाया जाता है। असंस्कारी व्यक्ति चाहे की उसका बच्चा संस्कारी बने तो यह संभव नहीं है।

• झांसी (उ.प्र.)

।। बाल प्रस्तुति ।।

दिमागी कसरत

• शान्तनु श्रीवास्तव

- वह क्या है, जिसे सफेद रहने पर गंदा और काला रहने पर साफ माना जाता है?
- यदि आप की गाय पूरब की ओर मुंह करके खड़ी है, तो उसकी पूँछ का रुख किधर होगा?
- ७ नकलची बंदर एक ऊँची दीवार पर बैठे हैं, उनमें से दो कूद गए तो दीवार पर कितने बंदर बचे?
- अगर तुम्हारे मामा की बहन तुम्हारी मौसी नहीं है तो क्या हैं वह तुम्हारी?
- वह क्या है जो बिना हाथ पैर के दूर-दूर की सैर करता है?
- एक जैसे तीन शब्दों से एक वाक्य बनाओ।
- एक ही जैसे ३ शब्द जिसका अर्थ उलटा सीधा पढ़ने पर एक समान हो?
- वह क्या है जिसे आप देख सकते है पर दिखा नहीं सकते?
- वह क्या है जिसे आप सोने से पहले उठाते हैं?

(उत्तर इसी अंक में)

• सिंहपुर (म.प्र.)

दादी का जादू

नाटक : डॉ. नीलम 'राकेश'

आज गाँव में दादी बाबा आने वाले हैं। घर में खूब साफ सफाई की गई है। माँ भाग–भाग कर जल्दी–जल्दी काम निपटाने में लगी हैं।

माँ – (ऊंची आवाज में) चिंकी रो नहीं। तुम्हारा मनपसंद सूप बना रहे हैं। बस आते हैं।

चिंकी– (थकी सी आवाज) नहीं आप आओ बस।

माँ– बस–बस बेटा आ गये।

उसी समय बाहर से गाड़ी की आवाज सुनाई देती है।

महेश – मालिकन! लगता है मालिक आ गए।

माँ– अरे महेश! साहब तो अम्मा–बाबूजी को लेने स्टेशन गये थे। लगता है वो लोग आ गए। महेश हाथ जरा जल्दी–जल्दी चलाओ। बापू जी का हलवा अभी बना नहीं है।

महेश – हम अभी बनाए देते हैं।

माँ– (बाहर जाते हुए) हाँ जल्दी करो।

(इसी समय कमरे में सबका प्रवेश)

बाबूजी – (पैर छूती हुई बहू को आशीर्वाद देते हुए) खुश रहो बहू! सुखी रहो।

माँ – अम्मा! रास्ते में आप लोगों को कोई परेशानी तो नहीं हुई।

दादी – (पैर छूती हुई बहू को उठाते हुए) अरे काहे कि परेशानी... बच्चों से मिलने की इतनी खुशी थी कि रास्ता काटना ही मुश्किल हो रहा था। अरे बहू, ये बच्चे कहाँ हैं? दिखाई नहीं दे रहे हैं। हम तो सोच रहे थे स्टेशन पर आएंगे।

माँ – वो....

दादी– क्या बात है बहू! तुम परेशान लग रही हो।

माँ– ऐसा कुछ नहीं है अम्मा! वो दरअसल चिंकी को तेज बुखार है और चारू उसी के पास बैठी है।...मन तो हम सबका भी था पर...

दादी– अरे! क्या हुआ मेरी चिंकी को? क्यों रे... (बेटे की ओर घूम कर) रोहन! तू रास्ते भर फालतू बातें करता रहा बच्चे का हाल नहीं बताया।

बाबूजी – अरे छोड़ो न! चलो–चलो बच्चे कहाँ हैं।

बाबा–दादी को देख दोनों खिल उठीं।

चिंकी– दादा...दादी...

चारू – बाबा.... (चारू दौड़ कर बाबा से लिपट गई।)

बाबा– डाक्टर ने क्या बताया?

माँ – डाक्टर कहां कुछ बताते हैं बाबूजी! बीमारी ने तो हमारे घर ऐसा डेरा डाला है कि जाने का नाम ही नही ले रही। एक ठीक होता नहीं है कि दूसरा बीमार हो जाता है।

दादी– ये तो होना ही था।

माँ – (आश्चर्य से) जी...

दादी– जी... की क्या बात है। स्टेशन से आते हुए देख रही थी मैं... कैसा कंकरीट का जंगल है ये शहर... सिर्फ ईट गारों के मकानों के झुण्ड...और शहर में तो फिर भी कहीं–कहीं पेड़–पौधे दिखाई दिये। पर तुम्हारी कालोनी में घुसते ही एकदम वीरानी ...कहीं भी एक भी पौधा नहीं दिखाई दिया। ऊपर से हर ओर कूड़ा।

रोहन– अम्मा! इस कालोनी में सभी बाहर से आकर रह रहे हैं। सब किराए पर रहते हैं। इसीलिए किसी का भी रुझान इस

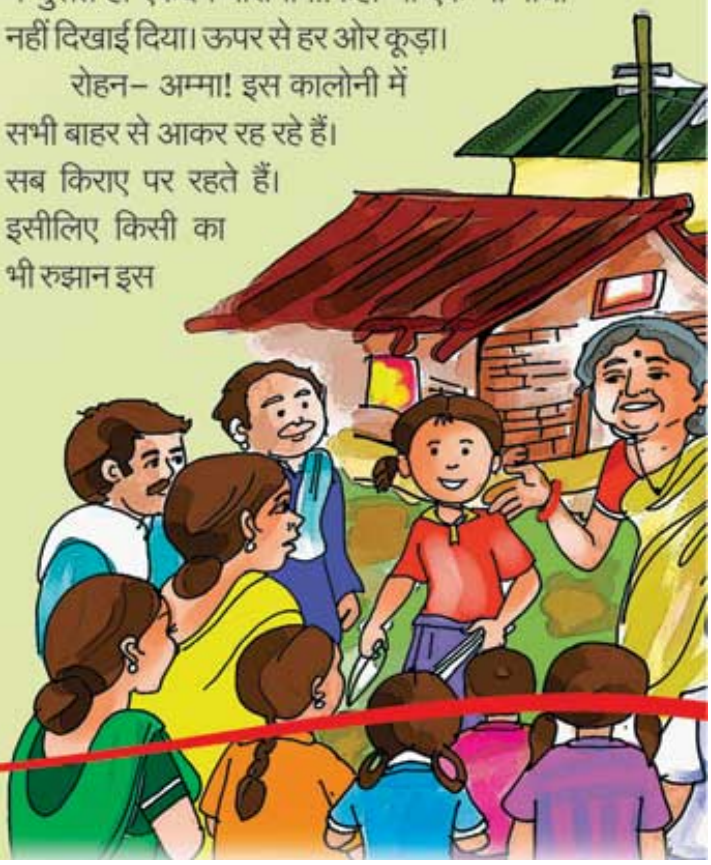

तरफ या इन चीजों की तरफ नहीं रहता।

दादी– ये लो, कैसे बात कर रहा है रोहन...। रहते तो तुम ही लोग हो। अपने स्थान की अच्छाई–बुराई के लिए तुम ही लोग जिम्मेदार हो।

माँ – (बात बदलते हुए) चलिए मैं नाश्ता लगाती हूँ।

दादी– ठीक है। नाश्ते के बाद मैं और चारू जरा तुम्हारी कालोनी देखकर आएंगे।

(दृश्य दो)

दादी और पोती बरामदे में बैठी हैं।

चारू – दादी आप थक गई क्या?

दादी– नहीं रे! मैं दुखी हो गई हूँ।

चारू – क्यों दादी?

दादी– बेटा, इस मोहल्ले में कोई भी कभी भी स्वस्थ नहीं रह सकता। सभी बीमार पड़ते ही रहेंगे।

चारू– (आश्चर्य से) क्यों दादी? आपको कैसे पता चला? वैसे दादी ये बात सच है। हम लोग पुराने वाले शहर में बीमार नहीं पड़ते थे। पर यहां तो बहुत बीमार पड़ते हैं। शाला में बहुत परेशानी होती है बार–बार काम पिछड़ जाता है।

दादी – हाँ, क्योंकि वहाँ का परिवेश और पर्यावरण साफ सुथरा था। हरियाली थी।

चारू– अरे दादी! इसका मतलब हम लोग जब तक यहाँ रहेंगे ऐसे ही बीमार पड़ते रहेंगे।

दादी– नहीं–नहीं मेरी बच्ची! अब दादी आ गई न...। अब दादी और चारू मिलकर यहाँ का परिवेश और पर्यावरण दोनों बदल देंगे।

चारू– (खुश होते हुए) सच दादी?

दादी– हाँ! पर तुम्हें मेरा साथ देना होगा।

चारू– पूरी तरह दादी। (चारू ने अपना हाथ आगे बढ़ाया)

मुस्कुराकर दादी ने चारू को चूम लिया।

चारू– दादी! हमें करना क्या होगा?

दादी– चारू कल सुबह हम दोनों सफाई अभियान शुरु करेंगे।

चारू– ठीक है दादी!

दादी– चारू! लेकिन एक काम अभी करना पड़ेगा। हम एक पोस्टर बनायेंगे, जिस पर लिखेंगे ''गंदगी हटाओ, स्वास्थ्य बचाओ।''

चारू– दादी! मेरी एक दोस्त बहुत अच्छी ड्राइंग बनाती है मैं उसके साथ बना लूं।

दादी – हाँ–हाँ, इस काम में हमें सबका साथ चाहिए। पर शुरुआत तो कहीं से करनी ही पड़ेगी।

(दृश्य तीन)

सुबह–सुबह कई सारे पोस्टर कालोनी में चिपक चुके थे। दादी और चारू अब झाड़ू और तसला लेकर सफाई करने जुटे तो कई सारे बच्चों का झुण्ड वहां आ कर खड़ा हो गया। दादी से थोड़े समय कुछ सवाल किए और फिर अभियान में शामिल हो गए। ग्यारह बजते कुछ महिलायें कुछ–कुछ खाने का सामान लेकर आ गई। जाड़े की कुनकुनी धूप में दादी ने सबको पर्यावरण का महत्व समझाया।

दादी– तुम सब यहाँ बिना बुलाए आई हो। मुझे अच्छा लगा।

चारू– मैं कुछ बोलूं?

(समवेत हँसी)

चारू– मेरी दादी कहती है, आखिर तो बीमार पड़ने वाले हमारे अपने ही हैं। अगर हम सब मिलकर रोज थोड़ी–थोड़ी सफाई करें तो हमारी कालोनी साफ हो जाएगी। है न दादी?

एक महिला– तू तो बड़ी प्यारी बच्ची निकली। अम्मा, आप बस बताती जाइए। हम सब मिलकर सफाई करेंगे।

दूसरी महिला– एक बार हमारी कालोनी साफ हो जाएगी न अम्मा फिर इसे गन्दा ही नहीं होने देंगे।

बच्चों की टोली आगे बढ़ी।

बच्चे– ये जिम्मेदारी हम बच्चे उठायेंगे। हम दुबारा गन्दगी नहीं फैलने देंगे।

दादी– मुझे तुम सबसे एक वादा चाहिए।

सब– जी अम्मा!!!

दादी– तुम सबने ध्यान दिया होगा, तुम्हारी कालोनी में एक भी पेड़ नहीं है।

(सब एक दूसरे की ओर देखकर खुसर–पुसर करते हैं।)

दादी– मैं चाहती हूँ तुम लोग दो मजदूर रखकर इस बीच वाले मैदान को साफ कराकर इसके किनारे पेड़ लगाओ। जिसके घर के सामने जो पेड़ होगा उस पेड़ के देखभाल की जिम्मेदारी उस घर की होगी।

समवेत स्वर– हाँ–हाँ अम्मा! हम ऐसा जरूर करेंगे।

चारू– दादी! हमें घर में फूलों के गमले चाहिए।

दादी– हाँ ये भी बहुत जरूरी बात है। दो–दो, चार–चार गमले आप सब लोग जरूर लगाइए। अपने बच्चों से उसमें पानी डलवाइए, निराइ, गुडाई करवाइये। जिससे कि इनके अन्दर बचपन से ही पर्यावरण के प्रति सजगता आये।

माँ– हाँ अम्मा! ये बात तो आपने बड़ी भली कही है। साथ ही हमारी आँखें भी खोली है।

एक महिला– हम सब अपने बच्चों की बीमारी से परेशान थे अम्मा! पर आज से पहले कभी भी बीमारी का कारण जानने की कोशिश नहीं की। इतने मच्छर जहाँ पैदा होंगे वहाँ मलेरिया तो होगा ही होगा।

चारू– दादी! कोने में एक जगह बहुत सारा कीचड़ था। देखा था न आपने?

दादी – हाँ देखा था। हैंड पम्प के पास।

चारू– दादी, उसका कुछ हो सकता है? वहाँ बहुत कीचड़ रहता है न तो कोई न कोई वहाँ गिरता ही रहता है।

एक बच्चा– मैं भी वहाँ फिसल कर गिर गया था। दादी! बहुत डर लगता है साइकिल चलाने में।

चारू– दादी! ये ठीक कैसे होगा?

दादी–अरे दो चार लड़के मिलकर हैंड पम्प के पास एक बड़ा सा गड्ढा खोदो।

बच्चा– उससे क्या होगा दादी?

दादी – फिर हम लोग पतली–पतली नाली बनाकर उस गड्ढे से जोड़ देंगे।

चारू– (ताली बजाते हुए) अब समझे... फिर सारा पानी नाली के रास्ते गड्ढे में चला जाएगा। और हमारी सड़क सूख जाएगी।

दादी– शाबाश!

कुछ लड़के– दादी, इस काम की जिम्मेदारी हम लेते हैं। हम लोग चार–पाँच दिन में ये काम पूरा कर देंगे।

दादी– एक बात याद रखना बच्चों! गड्ढे में जो पानी एकत्र होगा उसके ऊपर थोड़ा सा मिट्टी का तेल जरूर डाल देना।

चारू– उससे क्या होगा दादी?

दादी– मिट्टी के तेल के कारण मच्छर अण्डे नहीं देंगे मतलब मच्छरों की आबादी घट जाएगी।

कई बच्चे – अरे वाह! ये तो अच्छी जानकारी है हम याद रखेंगे।

दादी– चलो फिर आराम खत्म। अब काम पर चलें हम। टीम भी अब हमारी बड़ी हो गई है।

कई स्वर– हाँ दादी! चलिए।

बच्चों का समवेत स्वर– हुर्रे.....हमारी कालोनी होगी साफ और हम रहेंगे स्वस्थ्य।

दादी– और आप सब बनेंगे पर्यावरण रक्षक।

बच्चे– हुर्रे! हुर्रे!!!

• लखनऊ (उ.प्र.)

तू प्यार का सागर है

पत्र : दिलीप भाटिया

प्रिय दिलीप काका! नमस्ते। मैं? तमलाव गाँव से ललिता।

आप हमारे गांव के विद्यालय में परमाणु ऊर्जा के सदुपायों पर बिजली घर से वार्ता देने आए थे। कई बार आते रहे। सेवानिवृत्ति के पश्चात आपने अपने परिचय में स्वयं को भूतपूर्व वैज्ञानिक अधिकारी बतलाया। पर हम शाला की भोली मासूम गरीब बेटियों को जो प्यार अपने दिया वह तो कोई भूतपूर्व अधिकारी नहीं, अभूतपूर्व व्यक्ति ही दे सकता है।

अनुशासन, समय, संस्कार, चरित्र, कॅरियर, आत्मनिर्भरता के पाठ हमें आपने पढाए। गर्मी–सर्दी में हमारे जलते गलते पैरों मे आपने चप्पलें जूते पहनाना। सर्दी में कांपती हम बेटियों को आपने स्वेटर जर्सी कार्डिगन पहनाए। पोषाहार बनाने वाली बहिनों को आपने नवरात्रों में साड़ियाँ दी। काकी की स्मृति में आपने हमारी शाला के हर कमरे में पंखे लगवा दिए। हम जंगली फूलों का गुलदस्ता आपको देते, उसे भी आप घर पर कई दिनों तक पानी भरे गिलास में रखते थे। हमारे गांव की गुमटी की चाय नमकीन भी आप प्रेम से खाते पीते थे। हर वर्ष आपकी दी गई कॉपी में ही हम शाला का गृहकार्य करती रहीं। कक्षा आठ–दस की सभी छात्राओं की बोर्ड परीक्षा की फीस भी आपने भरी थी।

पूरे गाँव में आप घूमते थे। गर्मी में भी तेरहवीं पर प्रसाद भी आपने पत्तल दोनों में खाया। गांव की हर बेटी को शादी में कन्यादान का लिफाफा आपसे लिए बिना कोई बेटी विदा नहीं होती थी। हर आने वाली भाभी की मुँह दिखाई का शगुन भी आप देते थे। प्लांट वाले पानी या दवाईयों की एम्बुलेंस बंद कर देते थे तो हमारे गाँव वाले आपको ही समस्या के समाधान हेतु फोन करते थे। आपके पास हमारी शाला व गांव की हर समस्या का

समाधान होता था। हमारी शाला एवं गांव से आपको बहुत लगावा था। अपना स्वयं का जन्मदिन भी आप हम सबके साथ मनाते थे। बिस्कुट, लड्डू लेकर आते थे, पोषाहार बनाने वाली बहन की खीर आपको काजू कतली से भी अधिक स्वादिष्ट लगती थी।

भाटिया सर से आप दिलीप काका बन गए। प्यार का सागर हैं आप तो आपकी सेवानिवृत्ति पर गांव वालों ने आपके विभाग के प्रमुख को प्रार्थना पत्र भी लिख दिया था। पर हम गरीब की पुकार बड़े लोगों ने नहीं सुनी। लेकिन सेवानिवृत्ति के पश्वात भी आप शाला एवं गांव में निरन्तर आते रहे, हां प्लांट की समस्या पर आपकी आँखों में आंसू आ जाते थे कि अब मैं सेवानिवृत्त हो गया हूँ। कैसे तुम्हारी मदद करूँ। उगते सूर्य को सभी नमस्ते करते हैं डूबते सूरज को कौन अर्ध्य देता है। रावतभाटा के कॉलेज में भी हम बेटियों का शुल्क भरते रहे। हम में से कुछ बेटियों को तो आप ने बी.एड. भी करवा दिया। आपकी संजीवनी बूटी से आज मैं इसी स्कूल में शिक्षिका बन गई हूँ। आत्मनिर्भर बनकर ही शादी करने वाला आपका मंत्र अभी भी याद है। शहर में पले बड़े बड़े व्यक्ति गांव के प्रति इतना स्नेह रख सकते हैं। यह आपने कथनी से नहीं करनी से सिद्ध कर दिया है। क्या भूलूं क्या याद करूँ एक काका को साँप ने काट लिया था। आपने झाड़ फूंक के अंध विश्वास के लिए मना कर दिया। प्लांट के अस्पताल में उसका इलाज करवाया। स्वयं एक यूनिट खून भी देकर उसके प्राण बचाए। आज उन काकी के हाथों में बची सुहाग की चूड़ियां आपके कारण ही हैं। हमारे गाँव पर आपके इतने अधिक उपकार है जिन्हें इस छोटे से पत्र में लिखना संभव नहीं है। हा गाँव में कई मोर्चों पर आपको विरोध का भी सामना करना पड़ रहा है। शराब, तम्बाकू, बाह्य पदार्थों का उपयोग, विवाह, मृत्युभोज हर घर में शौचालय, लड़कियों की उच्च–शिक्षा, दहेज इत्यादि मोर्चों पर प्रयासों को सफलता मिलती है तब आपकी आँखें भर जाती हैं। पर आप प्रयास बंद नहीं करते। आपकी सहन शक्ति अपार है। गाँव की दूषित राजनीति के कारण एक गुट आपको धमकी भी देता हैं। पर आप चुप रहते है। आपका कहना है कि सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहीं। शाला के शिक्षकों को आप मार्गदर्शन देते हैं। पर अधिकांशतः आप एकला चालो रे की तर्ज पर चलते रहते हैं।

काका! स्वस्थ परम्पराओं हेतु आपके द्वारा प्रज्ज्वलित दीपक को हम सभी शिक्षक चिराग बनाये रखेंगे।

परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा विकरणित बीज, दाल, चावल के आपने हमें लाकर दिए जिससे कम समय में अधिक फसलें होने लगी है। मूंगफली की पैदावार तो दुगुनी हो गई है। गाँव के सभी किसान आपके कृतज्ञ हैं। नए बच्चों को आपने प्रोत्साहित कर फिटर, कारपेंटर, इलेक्ट्रिशियन के कोर्स करवाए एवं अपने प्लांट में दैनिक भत्ते पर ही सही रोजगार भी दिलवाया। नई पीढ़ी तो आपकी पूजा करती है। क्रमोन्नत करवाकर माध्यमिक विद्यालय बनवा दिया। पोसहार बनाने के लिए ड्रम दिए। पीने के पानी के लिए टंकी दी। आधुनिक स्वार्थी युग में इतने परोपकार कौन करता है? स्नेह की गागर प्यार के सागर हैं आप। कुछ गाँव वालों ने आपके सीधेपन, भोलेपन का अनुचित लाभ लिया है। बेवकूफ भी बनाया है फिर भी आप अपना सीधापन नहीं छोड़ना चाहते हैं। मन में तो बहुत कुछ है मनपसंद साथी मोहन पाकर आत्मसंतुष्ट भी हूँ। मुझे एक गुणवत्तापूर्ण जीवन देने के लिए मेरे पास धन्यवाद के औपचारिक शब्द आप जैसे महान व्यक्ति के समक्ष बहुत छोटे हैं।

ई–मेल से मैं आपको यह मात्र आपको अग्रिम सूचना भर देने के लिए दे रही हूँ आप अपनी व्यक्तिगत परेशानी किसी को नहीं बतलाते। पर आपका उदास चेहरा बहुत कुछ बता देता है। आगामी रविवार को मोहन आपको लेने आ रहा है।

ललिता बेटी को भी आपकी सेवा करने का अधिकार है। निर्णय हम कर चुके है आपको साथ रखने का। ललिता बेटी आपके आने की प्रतीक्षा करेगी एवं स्वागत भी। शेष मिलने पर।

आपकी बेटी ललिता

● रावतभाटा (राज.)

।। श्री गुरुनानक जयंती : कार्तिक पूर्णिमा।।

नानक जी का जन्मदिन

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

छोटे से कुश ने पूछ लिया–''गुरु नानक जी के जन्मदिन को प्रकाश पर्व के नाम से क्यों मनाते हैं? हमारे जन्मदिन में तो कुछ दीपक जलते हैं पर उनके जन्मदिन पर तो हर घर में रोशनी होती है। ''दादाजी ने समझाया–''वह इसलिए बेटे! कि वे महापुरुष थे, उन्होंने समाज में ज्ञान का प्रकाश फैलाया था।'' ''दादाजी वे तो पाँच सौ साल पहले हुए उस समय तो इतनी बड़ी टॉर्च भी नहीं होती थी सिर्फ लालटेन होती थी कम रोशनी वाली।''– कुश ने शंका व्यक्त की।

''ज्ञान का प्रकाश तो एक दूसरे को बताने से फैलता हैं। जो संत महापुरुष होते थे वे नगर–नगर भ्रमण करके लोगों को अच्छी बातें बताकर ज्ञान की रोशनी बांटते थे''– दादाजी ने समझाया। ''तो क्या वे भी आजकल के संतों की तरह बड़े–बड़े आश्रम बनवाते थे, बड़ी–बड़ी होटलों में ठहरते थे और हवाई जहाज से यात्रा करते थे''– कुश ने पूछा। ''नहीं बेटे एक तो उस समय इतनी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं और दूसरी बात यह कि वे यह सब निस्वार्थ भाव से परोपकार के लिए करते थे... अपनी प्रसिद्धि का उन्हें जरा भी लोभ नहीं होता था इसलिए उनकी बातें सीधे दिल में उतरकर असर करती थीं।''– दादजी ने बताया।

''दादाजी! मुझे गुरु नानकदेव जी के ज्ञान का एकाध उदाहरण बताइए।''–कुश ने आग्रह किया। ''हाँ क्यों नहीं। एक बार अपने शिष्यों के साथ भ्रमण करते हुए गुरु नानकदेव एक गांव में रुके। वह सज्जन, सुसंस्कृत लोगों की बस्ती थी इसलिए उनका वहां भव्य आदर सत्कार किया गया। अगले दिन वहां से विदाई लेते समय उन्होंने वहां के बाशिंदों को आशीर्वाद दिया– ''उजड़ जाओ।'' यह सुनकर उनके शिष्यगण चकित रह गए लेकिन खामोश रहे। संध्या होते वे दूसरे गांव में पहुँचे, संयोग से वह दुर्जन लोगों की बस्ती थी वहाँ के नागरिकों ने अपने स्वभावानुकूल नानकदेव और शिष्यों का खूब तिरस्कार अपमान किया तथा मखौल उड़ाया। अगले दिन वहां से प्रस्थान करते समय नानकजी ने आशीर्वाद दिया –''आबाद रहो।''

अब शिष्यों ने खामोशी तोड़ी। एक ने पूछा– ''आपके आशीर्वाद हमारी समझ से परे हैं। जिन्होंने

हमारी खूब सेवा, आवभगत की उन्हें आपने उजड़ जाने का अभिशाप दिया और जिन्होंने आपका अपमान किया उन्हें आपने आबाद रहने का आशीर्वाद दिया। यह कैसी पहेली है गुरुदेव हमें समझाए।'' गुरु नानक जी मुस्कुराते हुए बोले– ''मैंने सभ्य, सज्जन लोगों को उजड़ जाने का आशीर्वाद इसलिए दिया ताकि वे दूसरे स्थान पर जाकर अपनी सज्जनता का विस्तार करें और जो दुर्जन हैं वे एक ही स्थान पर आबाद रहे ताकि दूसरी जगह का माहौल खराब न हो।''

''अरे वाह मान गए लेकिन दादाजी! इस घटना से हमें क्या शिक्षा मिलती है?''– कुश ने पूछ लिया। ''यही कि अगर तुम्हारे पास कोई अच्छी चीज या गुण है तो उसे अवश्य दूसरों तक पहुंचाए ताकि वे भी उसका लाभ उठा सके लेकिन अपनी बुराई या अवगुण को मन में दबाकर रखो ताकि दूसरे पर उसका गलत प्रभाव न पड़ सके।''– दादाजी ने समझाने की चेष्टा की।

कुश का हिलता सिर बता रहा था कि दादाजी की बातें उसके मन में प्रकाश भरती जा रहीं है, ज्ञान का प्रकाश।

● इन्दौर (म.प्र.)

बुद्धि की परख

● चाँद मो. घोसी

ध्यान से देखकर बताओ इस जानवर के सींग, मुंह, गर्दन, धड़, पैर व पूंछ किसकी है?

(उत्तर इसी अंक में)

॥ बाल प्रस्तुति ॥

हमारा पहाड़

कविता : गौरव कर्मा

हमारा पहाड़ हिमालय है,
यह औषधियों का आलय है।
यहाँ गिरते हिम और पाला,
सूरज करता यहाँ उजाला।
भारत का यह ताज है,
यहाँ न आएँ आँच है।
ऋषियों की यह भूमि है,
शंकर का यह वास है।
यहाँ से निकले पावन गंगा,
भारत देश है रंग-बिरंगा।
ग्रीष्म में आती है यहाँ बाढ़,
फूलों से लद जाते हैं पहाड़,

हमारा पहाड़ हिमालय है,
यह औषधियों का आलय है।
यह करता है भारत में बरसात,
वर्षाऋतु में आती है, यहाँ घास,
यहाँ पर रहते लोग सुखी,
न होता यहाँ कोई दुःखी।
मौसम अच्छा रहता है,
सबका ही मन रमता है
हमारा पहाड़ हिमालय है,
यहा औषधियों का आलय है।

● खरगोन (म.प्र.)

जंगल में मोर नाचा

आलेख : डॉ. बानो सरताज

मोर पहले जंगल में रहा करता था। आदतें वही थीं जो आज हैं अर्थात् आनंदातिरेक में पर फैलाकर नाचना आरंभ कर देना। आकाश पर इधर काले मेघ छाये इधर महाशय नृत्य की तैयारी में लगे... पर जब लोग कहने लगे कि जंगल में मोर नाचा, किसी ने न देखा तो मोर साहब को एहसास हुआ कि उस के सौंदर्य को सराहने वाला, उस की नृत्यकला का पारखी कोई नहीं तो वो जंगल से बस्ती की ओर आ गया। बाग–बगीचों में, चिड़ियाघरों में अपने नृत्य के जलवे बिखेरने लगा।

३१ जनवरी, १९६३ को भारत के **राष्ट्रीय पक्षी** की उपाधि से गौरवान्वित हुआ।

संस्कृत में मोर का नाम 'मयूर' है। **मयूर** का अर्थ है मारने वाला। वो साँप को मार कर खा जाता है इसलिए उसे **भुजंग–भक्** (सांप को मारकर खाने वाला) अथवा 'मयूर' कहा जाता है।

मोर के सिर पर चमकीले नीले रंग की कलगी (शिखा) होती है इसलिए उसे **'शिखी'** अथवा **शिखावल** भी कहते हैं। उर्दू भाषा में **'मोर'**, फारसी भाषा में **'ताऊस'** यूनानी भाषा में **'पावो'** (Pavo) तथा अंग्रेजी में **पीकॉक** (Peacock) कहलाता है। मोर का वैज्ञानिक नाम (Pavo cristatus) अर्थात् **'कलगी वाला मोर'** है।

भारतीय प्राचीन ग्रंथों में मोर का उल्लेख प्रचुरता से उपलब्ध होता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में मोरनी का उल्लेख आया है। रामायण और महाभारत में मोर का उल्लेख आया है। विद्या की देवी सरस्वती का प्यारा है मोर। श्रीकृष्ण के मुकुट में शोभा देता है मोरपंख। 'स्कंदपुराण' में शंकर भगवान के पुत्र कार्तिकेय (जो देवताओं की सेना के सेनापति थे, के वाहन मोर का उल्लेख है।)

भारतीय इतिहास में मोर की उपस्थिति यत्र–तत्र–सर्वत्र दिखाई देती है।

- मौर्य वंश का नामकरण मोर पर ही हुआ है।
- मौर्य वंश के पंचमार्क (Panch mark peacock Reseroe) सिक्के प्रचलित किए।
- मौर्य काल के सिक्कों पर मोर का चित्र हुआ करता था।
- कुमार गुप्त ने अपने चाँदी के सिक्कों पर पंख फैलाए हुए मोर का चित्र अंकित करवाया था।
- एक और सिक्के पर कुमार गुप्त ने स्वयं को कार्तिकेय के रूप में मोर पर सवारी करते दिखाया है।
- सिंधु घाटी सभ्यता (२५०० पू. ई.) में मिट्टी के बर्तनों पर मोर का चित्र प्राप्त होता है।
- मुगल बादशाह मोरों को बहुत पसंद करते थे। महलों में मोर पाले जाते थे। बाबर और जहांगीर ने मोरों के चित्र बनावाए थे। बादशाह जहाँगीर के दरबारी चित्रकार उस्ताद मंसूर ने १६१० में मोर–मोरनी का सुंदर चित्र बनाया था।
- शाहजहाँ ने विश्व प्रसिद्ध मयूर सिंहासन बनवाया था जिसे १७३९ में नादिरशाह अपने साथ ईरान ले गया।
- चंद्रगुप्त मौर्य ने भी 'मोर–सिंहासन' बनवाया था।

मोर पंखों से छोटे पंखे, 'मोर पंखी' तैयार किए जाते। दरबार में राजा–महाराजों के सिंहासनों के समीप सेविकाएं बड़े–बड़े पंखे (मोरछल) लिए खड़ी रहती जिस से राजाओं को ठंडी हवा नहीं मिलती थी पूरा दरबार भी गर्मी से राहत पाता था।

संस्कृत तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं के लोकगीतों, भक्ति–गीतों, कहानियों में मोर का उल्लेख प्रचुरता से प्राप्त होता है। कवि कालिदास की रचनाओं में मोर के सौंदर्य का वर्णन हुआ है। चित्रकारी, मूर्तिकला, शिल्पकला तथा धातु–कलाकृतियों में मोर ही मोर नजर आता है।

मोर, भारत का राष्ट्रीय पक्षी कैसे बना? सुनिए...

पक्षियों की सुरक्षा के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संगठन काम करता है। १९६० में इस संगठन ने जापान की राजधानी टोकियो में एक कान्फ्रेंस आयोजित की थी। उस कान्फ्रेंस में ये निर्णय लिया गया कि प्रत्येक देश अपना एक राष्ट्रीय पक्षी निश्चित करेगा तथा उस की सुरक्षा की जिम्मेदारी लेगा। उस की भावी पीढ़ियों

को भी संरक्षण देगा। सभी देशों ने सुझाव स्वीकार किया। भारत ने मोर को 'राष्ट्रीय पक्षी' घोषित किया।

मोर को व्यापारियों और पर्यटकों ने संपूर्ण विश्व से परिचित कराया। सहस्त्रों वर्ष पूर्व मिस्र में मोर पहुंचाए गए।

● भारत ने इसराईल के बादशाह सोलोमन को भेंट स्वरूप कई मोर पेश किए थे।

● सिंकदर भारत से जाते समय २०० मोर अपने साथ ले गया। उस के पश्चात् मोर पहले रोम फिर इंग्लैंड पहुंचा।

भारत में मोर के ६ प्रकार पाए जाते हैं। मणिपुर, मिजोरम, असम, गुजरात, हरियाणा, राजस्थान में मोर बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। संपूर्ण विश्व में इस की ९००० प्रजातियां हैं। भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, अफ्रीका, बर्मा, जावा में भी मिलता है।

मोर अलग-अलग रंगों के भी होते हैं। जावा और जापान में नीले, पाकिस्तान, नेपाल तथा श्रीलंका में हरे मोर पाए जाते हैं।

मोर सदैव चौकन्ना रहता है। थोड़ा सा भी खतरा महसूस करता है तो सावधान हो जाता है। विवशता में उड़ता भी है।

मोर को अधिक गर्मी, अधिक सर्दी दोनों ही सहन नहीं होती इस कारण नदी-तालाबों के किनारे रहना पसंद करता है। हिमालय की दक्षिणी ढलानों पर रहता हैं पर एक हजार मीटर से अधिक की ऊंचाई पर नहीं। बर्फीले इलाके पसंद नहीं करता।

मोर, पेड़ों पर रात गुजारते हैं। यद्यपि तेंदुए और बिल्ली पेड़ों पर भी चढ़ जाते हैं, पर श्रवण शक्ति प्रबल होने के कारण मोर अपनी सुरक्षा करने में सफल हो जाते हैं।

मोर का शरीर ३ फीट लंबा और वजन ५ कि.ग्रा. तक होता है। पंख एक मीटर से अधिक लंबे होते हैं। इन में नीले रंग के चांद की आकृति के निशान होते हैं। ये विशेष पंख train कहलाते हैं। मोरनी का शरीर छोटा, रंग हल्का और वजन कम होता है। पंख लंबे नहीं होते, न ही आकर्षक होते हैं। नर अधिक सुन्दर होता है। सिर पर कलगी और गले का चमकीला मखमली रंग उसे और सुन्दर बनाता है। सुंदर पंखों का वरदान उसे प्रकृति से मिला है पर उस के पांव बहुत कुरूप होते हैं।

मोर का नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। अत्यंत मन-मोहक होता है। नृत्य के पीछे मोर के दो उद्देश्य होते हैं।

प्रथम उद्देश्य मोरनी को अपनी ओर आकर्षित करना होता है। मोर जब नृत्य करना है तो कई मोरनियां उसके चारों ओर एक हो एकत्र हो जाती हैं।

नृत्य का दूसरा उद्देश्य- आनंद प्रकटीकरण होता है।

मोरनी जनवरी से अक्टूबर के बीच वर्ष में एक बार अंडे देती है। अंडों की संख्या ४ से८ तक होती है, रंग पीला होता है अंडे का आकार मुर्गी के अंडों से थोड़ा बड़ा होता है। एक वर्ष के बाद बच्चे के सिर पर कलगी निकलती है जो एक कष्टदायक क्रिया है। कलगी निकलने के दौरान प्रायः बच्चे मर जाते हैं। मोर के बच्चे चार वर्षों में युवा होते हैं तब तक उन की देखभाल मोरनी के जिम्मे होती है।

मोर घोंसला नहीं बनाते, धरती पर ही अंडे देते हैं। जमीन खोद कर उस में घास आदि बिछा देते हैं। वहीं अंडे दिए जाते हैं, वहीं अंडों से बच्चे निकलते हैं।

मोर की प्रजातियां धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है। जिस प्रकार हाथी के दांत प्राप्त करने के लिए उन का शिकार होता है उसी प्रकार पंखों के लिए मोर का शिकार होता है। पंखों का व्यापार होता है, विदेशों में भेजे जाते हैं। मोर पंख से कलम, पंखे बनाए जाते हैं। मोर पंखों में तांबा पाया जाता है। मोर के परों को जलाकर तांबा निकालते हैं। अगस्त-सितम्बर महीनों में मोर स्वयं ही अपने परों को त्याग देते हैं। उन्हें प्राप्त करके व्यापार किया जा सकता है मोरों को मारकर पंख प्राप्त कर उपयुक्त नहीं है।

मोर की पीढ़ियां खत्म होने का एक कारण उनके आवास की समस्या है। आकाश को छूती इमारतों ने मोर के आवास छीन लिए है। नयी दिल्ली के 'मयूर विहार' का उदाहरण सामने है। कभी मोरों की बस्ती रहा मैदान आज भव्य कालोनी में परिवर्तित हो चुका है।

● चन्द्रपुर (महा.)

बड़े से छोटा

बाल दिवस पर मिले हैं बच्चों को ढेर से खिलौने
पता लगाना आपको कौन है किससे बोने।

(उत्तर इसी अंक में।)

निशानेबाज

कहानी : सुधा भार्गव

एक गाँव में गेंदाराम रहता था। वह निशाना लगाने में बहुत चतुर था। सुबह उठते ही बहुत से पत्थर बटोर लेता और कुँए की तरफ गुलेल लेकर निकल जाता।

उस समय लड़कियां और औरतें कुएं से पानी खींचकर घड़े भरतीं फिर उन्हें सिर पर उठाकर घर की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ातीं। गेंदाराम दूर से भरे घड़े पर निशाना लगाकर उन्हें फोड़ देता और खिलखिलाता...

हा-हा हो गया छेद
फूट गया मटका
पानी टप-टपका
जोर से लगा झटका
हा...हा...हा...।

गाँव वाले बड़े परेशान सब उसे छेदीराम-छेदीराम कहकर चिढ़ाने लगे। चिढ़कर तो वह और भी तेजी से घड़े फोड़ता। बच्चे बड़े पानी के लिए तरसने लगे।

उस गाँव में एक बार दाढ़ी वाले साधुबाबा आए। परेशान गाँव वाले उनके पैरों पर गिर गए और चिल्लाये-''महाराजा, बचाओ...बचाओ... इस छेदीराम ने घड़ों में छेद कर करके हमारा जीना हराम कर दिया है।''

''क्यों छेदीराम! क्यों सताते हो इन लोगों को?'' साधु बाबा ने पूछा।

''मेरा नाम छेदीराम नहीं गेंदाराम है। इन्होंने मेरा नाम बिगाड़ दिया है। मैं भी गुस्से में आकर इनके घड़ों की शक्लें बिगाड़ देता हूँ।''

''तुम्हें जितना गुस्सा करना है करो, जितने घड़े फोड़ने हैं फोड़ो पर एक शर्त हैं।''

''साधुबाबा, आप तो बहुत अच्छे हैं। घड़े फोड़ने को मना भी नहीं किया। आपकी हर शर्त मानने को तैयार हूँ।''

''सुनो, जितने घड़े तुम फोड़ोगे, उतने तुम्हें नए लाने होंगे। फिर उन्हें भरकर घर-घर पहुँचाओगे।''

''यह तो मेरा चुटकियों का काम है दीये तो मुझे बनाने आते ही हैं घड़े भी बना लूंगा, फिर पानी भरने में क्या देर।'' वह इतराता हुआ बोला।

अब तो वह पेड़ की ऊँची सी डाली पर बैठकर खूब निशाना लगाता। रात घड़े बनाने में गुजर जाती और दिन में उन्हें भर-भरकर घर-घर पहुँचाता रहता।

गाँव वाले बड़े खुश। पुराने घड़ों की जगह उन्हें नये घड़े मिलने लगे। औरतें खुश। बिना मेहनत के पानी भरे घड़े उनके घर पहुँच रहे थे। गेंदाराम भी खुश। निशानेबाजी के शौक को जी भरकर पूरा कर रहा था। पर उसका यह शौक कुछ दिनों तक ही पूरा हो सका।

रात-दिन के जागने से और पानी की ठंडक ने गेंदाराम को बुखार ने आन दबोचा। घड़े बनाने से जो आमदनी होती वह कम होने लगी क्योंकि बने बनाए घड़े तो बाजार की जगह गांववालों के घरों में पहुँच जाते।

धीरे-धीरे घड़ों पर निशाना लगाना उसका कम हो गया। एक दिन ऐसा आया जब न ही उसने किसी के घड़े पर निशाना लगाया और न छेदीलाल कहने से चिढ़ा।

औरतें परेशान हो उठीं...। अरी बहना, इसे क्या हो गया है। न घड़े फोडता है और न चिढता है। हमें सारा पानी भरना पड़ रहा है। इस ढोया-ढाई से तो हमारे कंधे दुखने लगे।

अब वह समझदार हो गया है। एक औरत बोली।

गेंदाराम हँसकर बोला-सच में मैं समझदार हो गया हूँ। अब न मैं अपने लिए गड्ढा खोदूंगा और न ही उसमें जाकर पड़ूंगा।

● बैंगलुरू (कर्नाटक)

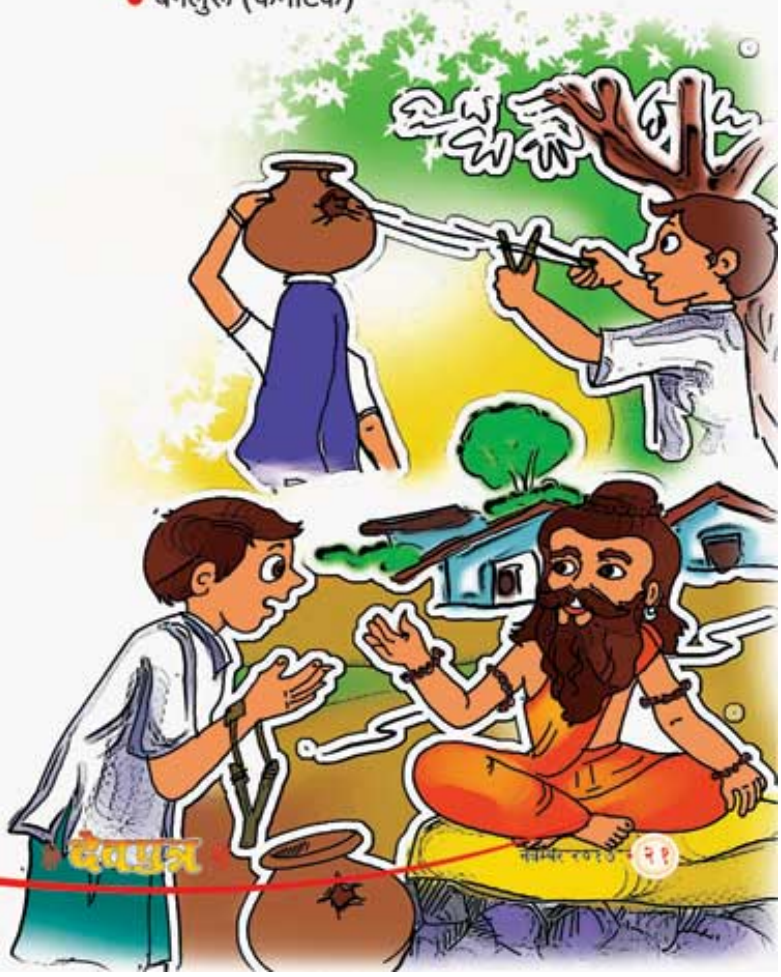

गदहे की बारात

कविता : शुभदा पांडेय

गदहे की बारात में
हाथी, घोड़ा साथ में
चमकीली शेरवानी थी
पगड़ी राजस्थानी थी
फूलों से मुँह ढका गया
चाल चटक तलवार नया
जंगल में सब बात करें।
गदहे की बारात चलें।
भालू, बंदर, चीता, ऊँट
पहने, जूता, टाई, सूट,
धोबी लड्डू बाँट रहा
नहीं बोलना डॉट रहा

खुद को राजा मान लिया
शाही था अंदाज दिखा
जब बाजा की धूम हुई
सब नाचे हैं थई-थई
नेगचार में पान मिला
गदहा खाकर होठ सिला
शेरु को न बात रुची
शानदार बारात चली
कानाफूसी हुई अनेक
पंडित, नाई हुए सचेत
मंत्र पढ़ो बगुला बोला
चेपो-चेपो भेद खुला।

● शिलचर (असम)

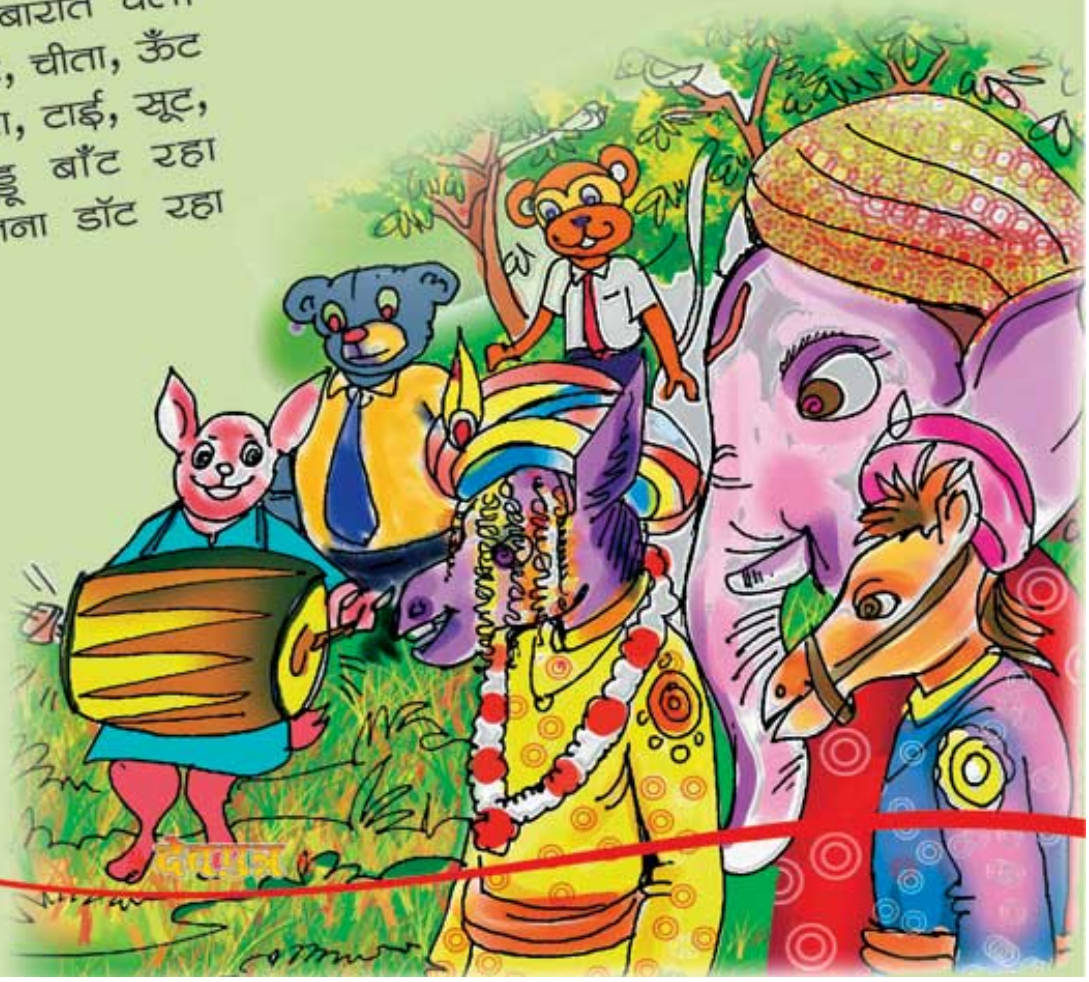

अच्छा नहीं सुनो होता है

कविता : कृष्ण 'शलभ'

• सहारनपुर (उ.प्र.)

कहा न माने जो, रोता है
अच्छा कभी नहीं होता है।
बात समझना मेरे भाई

दिन चढ़ने तक सोते रहना
बात-बात में रोते रहना।
करते रहना सदा बुराई
अच्छा कभी नहीं होता है।

घर से निकले लिए किताब
शाला पहुँचे नहीं जनाब
उछल कूद, खाली चतुराई
अच्छा कभी नहीं होता है

रोज-रोज की कट्टम कट्टी
हर पल करना बातें खट्टी
बिना बात की हाथापाई
अच्छा कभी नहीं होता है।

गोलू मोलू

कविता : मृदुल कुमार सिंह

तन के अच्छे मन के सच्चे।
गोलू-मोलू से हम बच्चे।।
न्यारे-न्यारे प्यारे-प्यारे
हँसते गाते मिलकर सारे।
लगते फूलों के हैं गुच्छे।
गोलू-मोलू से हम बच्चे।।
तितली, परियां, जुगनू सारे
नील गगन के चाँद सितारे।
खेल-खिलौने माँगे अच्छे।
गोलू-मोलू से हम बच्चे।।
रो-रो जीते हँस-हँस हारे
घर आँगन के राज दुलारे।
मीठी बातों के है लच्छे।
गोलू-मोलू से हम बच्चे।।

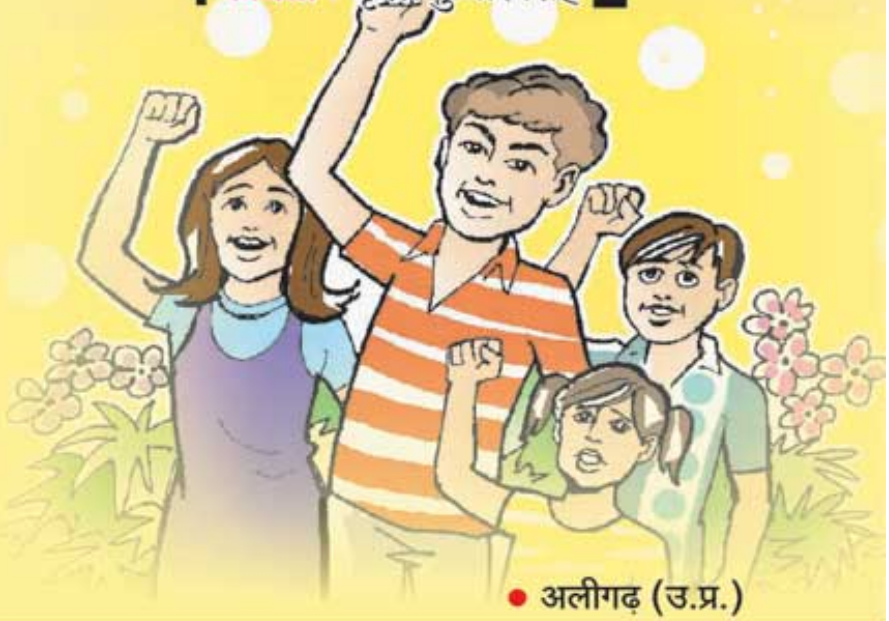

• अलीगढ़ (उ.प्र.)

।। गीता जयंती : मोक्षदा एकादशी (२९ नवम्बर)।।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे

कहानी : कमलाप्रसाद चौरसिया

गीता को रज्जू का गीताजी संबोधन बहुत भाया। वह मन ही मन प्रसन्न थी। प्रसन्नता लिए हुए ही सन्ध्या समय दादाजी के सामने आकर बैठ गई। वैसे तो प्रतिदिन शाम को उसके पास बैठकर सत्संग किया ही करती थी। शाम को रज्जू के घर का ही झाड़ू–पोंछा का समय होता था। अच्छी तरह अपना काम निपटाकर हाथ–पैर धोकर, अच्छी तरह शुद्ध होकर दादाजी के सामने आ बैठती।

दादाजी को प्रसन्नता होती कि कोई तो है जो उनके इस बुढापे में उनके ज्ञान का लाभ उठाने के बहाने सत्संग करने के लिए प्रस्तुत है। गीता का आकर बैठते ही चाय की मांग कर बैठते। गीता खुशी–खुशी सेवा के अवसर का लाभ उठाती। गीता के मुख की चमक देखकर दादाजी अपने विस्मय को रोक न सके, ''गीता! मैंने ऐसी कौन सी बात कह दी कि तुम चहक उठीं। तुम्हें ऐसी खुशी मिली कि दिल में न समाए, बात है कुछ ऐसी कि कहे बिन रहा न जाए। कह डालो।''

''बात ही कुछ ऐसी है दादाजी, आज रज्जू भैया ने गीता के विषय में पूछा। मैंने आपसे जो कुछ सुना था, बता दिया। मैंने उस पर अपनी चतुराई की धाक तो जमा दी। अब मैं असमंजस में हूँ। सुन–सुनकर सयानी तो बन गई। अज्ञानी हूँ, अज्ञान कब तक छिपाकर रख सकूँगी। अब यदि वह किसी श्लोक के बारे में पूछेगा तो क्या जवाब दूँगी। उसकी संस्कृत की पाठ्य पुस्तक में तो श्लोक हैं ही।''

''चिन्ता करने की कोई बात नहीं। तुम अपने मन में रज्जू को बैठा लो। खुद को रज्जू समझकर खुद से प्रश्न करो। पढ़ी लिखी नहीं हो तो क्या हुआ। मेरे पास बैठा करो मैं तुम्हें पढाऊँगा भी और श्लोक पर बात भी करूँगा। लो, गीता का पहला श्लोक सुनो–

'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।''

''दादाजी!'' गीता ने प्रश्न किया, ''धर्मक्षेत्र और

कुरुक्षेत्र दोनों ही खेत तो एक ही हैं जहाँ कौरव–पाण्डवों के बीच युद्ध हुआ था।''

''दादाजी हँस पड़े, ठीक कह रही हो, दोनों खेत ही हैं जहाँ जो बोया जाता है, वही उगता है। भगवान कृष्ण ने युद्ध के लिए क्षेत्र, मेरा कहने का अर्थ खेत ही ऐसा चुना था, जहाँ दो भाई हिल–मिलकर नहीं रहते। छोटे ने पुरखों की जमीन पर कब्जा कर रखा था। वह अपनी

इच्छा के विरुद्ध न तो माँ–बाप की सुनना चाहता था, न ही सयानों की। गुरुजनों से तो विचार करना, उनकी बात सुनना उसे कतई पसंद नहीं था। उसे आशंका थी कि वे नीति की बात कहेंगे। कहेंगे कि तुम्हारे पूर्वजों ने अपने पुण्यकर्मों से इतना बड़ा साम्राज्य प्राप्त किया है। इसे व्यर्थ बैर और वैमनस्य का विषय मत बनाओ। समझाने–बुझाने पर बड़े भाई कम से कम भरण–पोषण योग्य भूमि से अधिक नहीं चाहते किन्तु इसकी क्या आश्वस्ति (गारण्टी) है कि देर–सवेर वे हमारा हिस्सा न हड़पेंगे। छोटे को इस बात का ज्ञान था कि लोगों के साथ उसका व्यवहार ठीक नहीं है। लोग उसे पसंद नहीं करते। इसके विपरीत बड़े और उसके परिवार के लोगों का व्यवहार सबसे अच्छा हैं, वह जनता की चहेते हैं। अतः उनको सहयोग भी अच्छे लोगों का नहीं मिलेगा। विशेष बात यह है कि छोटों का कुटुम्ब बहुत बड़ा है। उसके पास जनबल और बाहुबल इतना अधिक है कि कोई उनके सामने टिक ही नहीं सकता। कोई कुछ भी कहे हम उन्हें भरण–पोषण योग्य भी देने के लिए तैयार नहीं। उनमें दम हो तो अपने पुरुषार्थ से, बाहुबल से कमाकर दिखायें। बस इतनी सी बात है गीता, इसलिए कृष्ण ने इस क्षेत्र को चुना क्योंकि यहाँ धर्म का और कर्म के बीच का युद्ध है। एक के लिए यह धर्मयुद्ध और दूसरे के लिए कर्म है। दुर्योधन ने तो स्पष्ट कह दिया था कि मैं धर्म को अच्छी तरह जानता हूँ फिर भी न तो मेरी धर्म करने में रुचि है और न ही अधर्म करने से विरक्ति। वो कहता है –

जानामि धर्मं, न च मे प्रवृत्तिः
जानाम्यधर्म न च मे निवृत्तिः।

धर्म से वह बचकर रह भी नहीं सकता और धर्म करना भी नहीं चाहता। इसके विपरीत युधिष्ठिर धर्म को इतना समर्पित है कि उसे धर्मराज कहा जाता है। वह धर्म करने और धर्म पर स्वयं आचरण करने में रुचि रखता है। संकल्पित है कि धर्म के विरुद्ध न तो आचरण करने और न अर्जित करने के लिए तैयार है। अधर्म से अर्जित खाने और खिलाने के विरुद्ध है क्योंकि अधर्म से अर्जित खाने

से मन दूषित होता है, आचरण अशुद्ध होता है, अनुचित कर्म करने से प्रसन्नता होती है। लोग भूल जाते हैं कि अधर्म से अर्जित का विनाश निश्चित है।

अतः यह कुरुक्षेत्र ही है जहाँ एक धर्म को जानते हुए भी धर्माचरण के सिवा कुछ नहीं करना चाहता कुरुक्षेत्र में धार्मिक अनुष्ठान होते रहे हैं, और आज भी हो रहे हैं। अतः यह धर्म क्षेत्र भी है, तपोभूमि भी।''

रज्जू जो बीच में आकर बैठ गया था, और चुपचाप सुन रहा था, बोल पड़ा ''दादाजी! मेरा मन कहता है कि धृतराष्ट्र 'मामकाः' मेरे जैसा कि आपने पहले बताया था– मामकाः का अर्थ है मेरे, मेरे कहकर बताना चाहता है कि मेरे पुत्र धर्मयुद्ध कर रहें हैं। ऐसा कहते हुए उसका सीना चौड़ा हो गया होगा। वैसे भी उसके सौ पुत्र हैं और उसके भतीजे पाँच। इसलिए भी गर्व से उसकी छाती फूल हुई है।

'मेरे–तेरे' में 'मेरे' में कुछ विशेष होता है। मतलब कि मेरे ही श्रेष्ठ हैं, शेष सब तुच्छ। चूँकि **धर्मो रक्षति रक्षितः** कहकर कहा गया है कि धर्म ही रक्षा करता है। इसलिए धर्म पर आचरण करने वालों में उनके पुत्र श्रेष्ठ हैं। उनकी जय निश्चित है। जय मेरे पुत्रों की ही होगी क्योंकि वे धर्म के मार्ग पर चलते हुए न्याय के लिए युद्ध कर रहे हैं।

''ठीक कह रहे हो रज्जू'' दादाजी ने कहा, दुनियाँ में जो सबसे बड़ा दुराचारी, अन्यायी और अहंकारी होता है, वही धर्म की सबसे ज्यादा दुहाई देता है। जो पीड़ित है, दुःखी है, प्रताड़ित है, वह अन्याय सहता हुआ भी, मन ही मन क्यों, सबके सामने कहता है, ''उपर वाला सब देख रहा है। पाण्डव अन्याय का प्रतिकार करने में समर्थ थे, फिर भी नहीं चाहते थे कि भाईयों–भाईयों में विद्वेष बढ़े। वे शान्ति चाहते थे। आदर करते थे अपने ताऊ धृतराष्ट्र और ताई गांधारी का अपने माता–पिता से बढ़कर। सम्मान करते थे पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, कुलगुरु कृपाचार्य, विदुर का ये सब महात्मा चाहते थे कि भाइयों में भाईचारा बना रहे। भाइयों में वैमनस्य कुल का नाश करता है। किन्तु उनकी नहीं चली।

कहना होगा कि दुर्योधन कर्म की महत्ता को समझता था। वह अपनी प्रजा को अपने आचरण से प्रसन्न कर उनका समर्थन प्राप्त करना चाहता था। महाकवि भारवि वनेचर के मुख से उसके सुशासन की व्यवस्था की प्रशंसा करते हुए कहते हुए कहते हैं– **''दुरोदद्धर्म जितां महीं नयेन जेतुं समीहते।''** वह जानता है कि उसने द्यूत द्वारा अधर्म से भूमि को जीता है। अतः अब वह उसे कर्म से जीतना चाहता है। अतएव उसने प्रजा के सुख के लिए कुआँ, बावड़ी, नहरें खुदवाई। शासन व्यवस्था चुस्त–दुरस्त बनाई। कृषि तो ''दैवमातृका'' अर्थात इन्द्रदेव की वर्षा पर निर्भर रह ही नहीं गई थी। नहरों द्वारा सिंचाई की इनती उत्तम व्यवस्था की गई थी। अपने पुत्र के इतने अच्छे कर्मों पर पिता का गर्व करना स्वाभाविक है। अतः धृतराष्ट्र को विश्वास हो गया कि दुर्योधन के जनोपकारी सेवाओं की, उसके कर्म की अवश्य जय होगी। प्रजा उसका साथ देगी और बेटा रज्जू, जहाँ तक मामका का प्रश्न है, धृतराष्ट्र का उत्फुल्ल रहना स्वाभाविक है। अब्दुर्रहीम खानखाना कहते हैं–

''ज्यों रहीम सुख होता है, बढ़त देख निज गोत।
ज्यों बड़री आँखियान लखि अद्भुत होत उदोत।।

''एक बात समझ में नहीं आई दादाजी!'' गीता जो अब तक धीरश्रोता बनी बैठी थी, अधीर हो उठी, ''पाण्डव आखिर थे तो धृतराष्ट्र के अपने ही उसके अनुज पुत्र उनके लिए 'पाण्डवाः' संबोधन का प्रयोग समझ में नहीं आता। क्या इस संबोधन से धृतराष्ट्र की पाण्डवों के लिए घृणा बरसती प्रतीत नहीं होती।''

समझ में आ जाएगा। अभी समझ में आ जाएगा गीता। कहने वाले तो कहते हैं कि सामने वाले कमजोर प्रतिद्वन्द्वी को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए किन्तु जब अपने और पराए का भेद आ जाता है, तब पराए हीन ही प्रतीत होते हैं। धृतराष्ट्र के लिए पाण्डव पराए हो गए हैं। इसलिए पाण्डवाः संबोधन में धृतराष्ट्र का पाण्डुपुत्रों के लिए धिक्कार भाव ही है। वैसे भी पाण्डवाः में पाण्डु का भाव तो है ही। पाण्डु का अर्थ है पीला। पाण्डुरोग को

पीलिया के नाम से भी जानते हैं लोग।''

''धृतराष्ट्र के कहने का अर्थ यह है दादाजी कि मामकाः मेरे पुत्रों के दल–बल को देखते ही पाण्डवों के चेहरे पीले पड़ गए।

''तू तो बहुत समझदार हो गया रज्जू,''दादाजी ने रज्जू की पीठ थपथपाई, ''था भी कौरवों का दल पाण्डवों के दल से अनेक गुना। पाण्डवों के पास तो केवल अकेले निहत्थे कृष्ण थे, कौरवों के पास उनकी एक अक्षौहिणी यादव सेना।''

''अब प्रश्न है दादाजी कि धृतराष्ट्र ने इसे उत्सव क्यों कहा। यह तो युद्ध है, उत्सव नहीं।''

धृतराष्ट्र ने उसे युयुत्सव कहा। कहा मामकाः और पाण्डवाः युयुत्सव के लिए एकत्र हुए हैं। इस विषय में तो मैंने सोचा नहीं। तुमने पूछ लिया है तो सोचता हूँ। सोचता हूँ कि जैसे आज खेल उत्सव होते हैं। उसमें हार जीत का कोई अर्थ नहीं होता। हार–जीत के भाव को मन से निकालकर सब प्रसन्न मन से लड़ते–भिड़ते हैं। हार जीत के बाद सब प्रसन्न मन से एक दूसरे के गले मिलते हैं। सब मित्र होते हैं, भाई–भाई हो जाते हैं पहले जैसे। युयु का एक अर्थ है घोड़ा। जैसे आज लोग ज्यादा–उछल–कूद करने वाले लड़कों को घोड़ा कह देते हैं, धृतराष्ट्र भी इन लड़ने–भिड़ने के इच्छुक अपने बच्चों को घोड़ा कहता है, और उनके लड़ने–भिड़ने के खेल को उत्सव। धृतराष्ट्र ने सोचा ही नहीं था कि दुर्योधन का सोच इतना भयंकर है इसलिए वह इसे गंभीरता से नहीं लेता। सोचता है– घोड़े हैं, लड़ने भिड़ने की इच्छा है तो लड़ भिड़ लेने दो। युयुत्सा का अर्थ ही है लड़ने–भिड़ने की इच्छा, अभिलाषा। लड़–भिड़कर एक हो जाएंगे। है तो आखिर भाई–भाई ही। संग–संग खेले हैं, संग–संग बड़े हुए और संग–संग शिक्षा भी प्राप्त की है। बचपन में, बाल्यकाल में, किशोरावस्था में भी लड़ते–भिड़ते रहे और एक भी हो जाते थे। लड़–भिड़कर एक हो जाएँगे। उसे ज्ञात ही नहीं था, सोच भी नहीं सकता था कि उसके पुत्र का मन इतना मलिन है, और इसी मलिनता के साथ वह युवा हुआ है। गीता का प्रथम श्लोक का अर्थ इतना रोचक हो गया था कि अपने आप उनकी रूचि गीता पढ़ने में और बढ़ गई।

● भोपाल (म.प्र.)

संस्कृति

प्रश्नमाला

१. वन में श्रीराम और लक्ष्मण को शूर्पणखा किस स्थान पर मिली?
२. महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष के केवल तीन ही योद्धा जीवित बचे। एक अश्वत्थामा और दूसरे कृपाचार्य, तीसरा योद्धा कौन था?
३. यूरोप के किस देश का प्राचीन नाम 'ऋषिय' था?
४. बावन शक्तिपीठों में से एक यशोदेवेश्वरी माता बांग्ला देश के किस नगर में हैं?
५. भारतीय पंचांग के अनुसार नये वर्ष का प्रारम्भ किस माह से होता है?
६. महाराजा जयपाल के समय अफगास्तिान (गांधार) की राजधानी कहाँ थी?
७. भारत के वे गणितज्ञ कौन थे जो रेखागणित के विद्वान थे और जो यूनानी गणितज्ञों के पाँच सौ साल पहले हुए थे?
८. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम जैसी ही सशक्त क्रांति की योजना बाद में किन क्रांतिकारी संगठन ने बनाई?
९. शेखावाटी के बठोठ ठिकाने के दो क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों को जबर्दस्त चुनौती दी। लोक-गीतों के नायक बने ये महावीर कौन हैं?
१०. सबसे पहले शस्त्र धारण करने वाले गुरु नानकदेव की परम्परा के गुरु साहिबान कौन थे?
(उत्तर इसी अंक में)

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

प्रताप सम्मान

श्री छोटेलाल पाण्डेय

बन्धु / भगिनी !

क्रांतिकारियों पर अपने अनुसंधान पूर्ण अनेक खण्डकाव्यों से भारत माता की साहित्य सेवा करने वाले श्री छोटेलाल जी पाण्डेय (सतना) द्वारा इस वर्ष से उत्कृष्ट क्रांति साहित्य को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य लेकर देवपुत्र के सहयोग से 'प्रताप सम्मान ' की योजना की है। वर्ष २०१७-१८ में क्रांतिकारियों अथवा क्रांति पर उत्कृष्ट साहित्य (किसी भी विधा में) लिखने वाले एक सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार को ५ हजार का सम्मान प्रदान किया जाएगा।

प्रविष्टि स्वरूप आप अपनी पुस्तक/रचना की ३ प्रतियाँ प्रताप सम्मान २०१७-१८, ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.) के पते पर दिनांक ३० अप्रैल २०१८ तक आवश्यक रूप से भेजें। सर्वश्रेष्ठ कृति का चयन निर्णायक मण्डल द्वारा किया जाएगा।

दिन सुहाने बचपन के

कविता : अशोक 'आनन'

नन्हीं-नन्हीं चिड़िया जैसे।
भोली-भाली गुड़िया जैसे।
दिन सुहाने बचपन के जो-
रहे महकते कलियाँ जैसे।
रंग-बिरंगी तितली जैसे।
सावन की वे बदली जैसे।
दिन सुरीले सरगम के संग-
ढोल-मंजीरा-ढफली जैसे।
सूरज-चाँद-सितारे जैसे।
अंजीर-दाख-छुहारे जैसे।
खींच हृदय को बरबस लेते-
काशी के भिनसारे जैसे।
झरनों की वे कलकल जैसे।
रुनझुन-रुनझुन पायल जैसे।
हृदय सभी को धो वे जाते-
पावन गंगा के जल जैसे।
बचपन यों ही बीत न जाए।
खेले कूदें, नाचें गाएं।
नित त्योहार नए आते हैं
हिलमिल कर हम रोज मनाएं।

• मक्सी (म.प्र.)

बुत शिकन

शिवाजी के गुप्तचरों ने बीजापुर दरबार में अफजल खाँ द्वारा की गई प्रतिज्ञा का समाचार उन्हें पहुँचा दिया। राजगढ़ दुर्ग में शिवाजी ने अपने अन्तरंग साथियों के साथ बैठकर अफजल खाँ से निबटने के संबंध में नीति-निर्धारित की।

बीजापुर से अफजल खाँ विशाल सेना लेकर निकला और मार्ग में आने वाले ग्रामों, नगरों में अपनी विनाश लीला करता बढ़ा चला जा रहा था। जब उसकी सेनायें कूच करती, तो भूचाल सा आ जाता। दुर्बलचित्त लोग घबरा जाते और प्राणों की भीख मांगने लगते। स्वराज्य के भी कई समर्थक उससे जा मिले।

अफजल खाँ की नीति किसी तरह शिवाजी को मैदानी इलाके से खींच लाने की थी। जिससे मराठा सेना को आसानी से पराजित किया जा सके। इस उद्देश्य में सफलता प्राप्त करने के लिए उसने भिन्न भिन्न प्रकार से शिवाजी को उत्तेजित करने का प्रयत्न किया।

सबसे पहले उसने तुलजापुर को अपना शिकार बनाया। वहां शिवाजी की कुल आराध्या तुलजा भवानी का प्रसिद्ध मंदिर था जहाँ दूर-दूर से प्रतिवर्ष असंख्य हिन्दू देवी दर्शनों के लिए जाते थे। खान ने स्वयं लोहे के हथौड़े से मूर्ति के टुकड़े-टुकड़े कर पैरों तले रौदा और मंदिर को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। जब इससे भी उसकी तृप्ति न हुई तो कई गायों को लाकर मंदिर की वेदी पर काटा गया और धर्मान्ध मुसलमान सैनिकों में गोमांस वितरित किया गया।

जब राजगढ़ यह समाचार पहुंचा तो मराठा और आग बबूला हो उठे। उन्होंने शिवाजी से कहा- ''महाराज, अब हमसे सहन नहीं होता। आप आज्ञा दीजिए। हम इस खान के बच्चे की बोटी-बोटी काट कर कुत्तों को डाल दें।''

शिवाजी की आँखों में भी खून बरस आया फिर भी वे धैर्यभाव से बोले-''अभी समय नहीं आया है।''

तुलजापुर से निकलकर अफजल खाँ पंढरपुर पहुंचा। इसे दक्षिण की काशी कहा जाता है। खान ने वहाँ विट्ठल मंदिर की ईंट से ईंट बजा दी। जिस किसी ने प्रतिरोध करना चाहा, उसकी उंगलियाँ काट डालीं या फिर गर्दन ही उड़ा दी।

अब तक खान मलवंडी गाँव जा पहुँचा था। शिवाजी को राजगढ़ से नीचे उतारने के लिए उसने एक अचूक निशाना साधा। शिवाजी के साले बजाजी निम्बालकर को मुश्क बांधकर छावनी में लाया गया, जहाँ उसका भिन्न-भिन्न तरीकों से अपमान किया गया।

राजगढ़ में शिवाजी की बीमार पत्नी सईबाई ने उनकी ओर याचना भरी दृष्टि से देखा और कहा- ''आप अब भी क्या

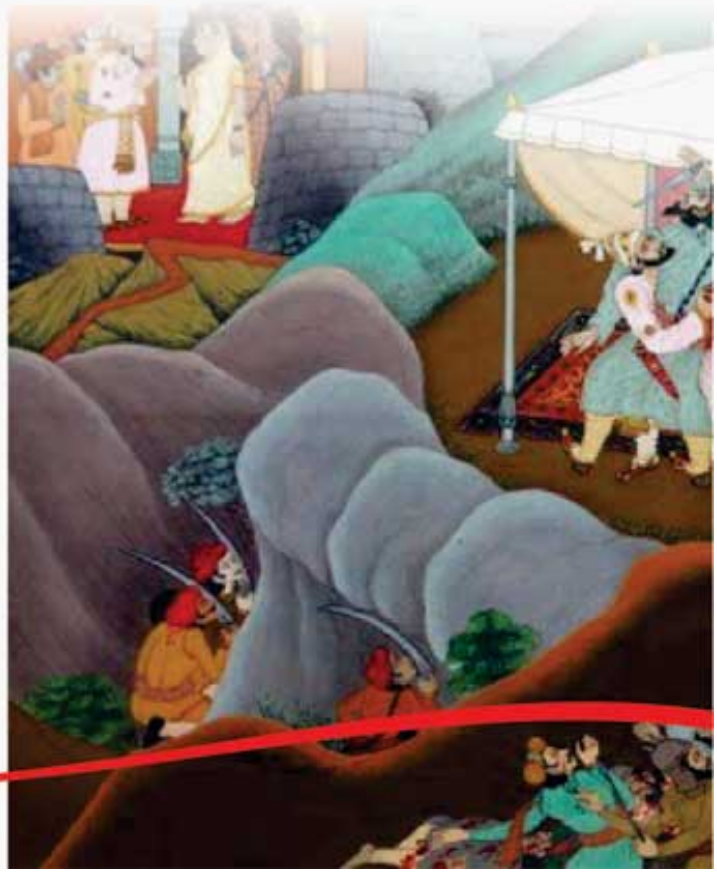

इसी तरह शांत बने रहेंगे और सब कुछ सहन करते रहेंगे?''

शिवाजी ने उन्हें भी सान्त्वना दी और उपयुक्त समय आने पर सब अपमानों का बदला लेने का वचन दिया।

शिवाजी के दुर्ग में अफजल खाँ के अत्याचारपूर्ण कारनामों को सुन-सुनकर रोष फैलता जा रहा था। कई सरदार अब और अधिक प्रतीक्षा के पक्ष में नहीं थे। बहुत से लोग अत्यधिक उत्तेजित हो उठे थे। शिवाजी ने एक शाम को सबको बुलाया और सम्पूर्ण परिस्थिति का मूल्यांकन करने के लिए विचार विमर्श आरम्भ किया। शिवाजी ने उन सबको निःसंकोच अपने विचार प्रकट करने दिये।

अपने साथियों का आक्रोश देखकर शिवाजी को बुरा नहीं लगा। उनकी बातें ठीक ही थीं। धर्म का अपमान और धन जन की इतनी हानि कभी नहीं हुई थी। वे चाहते थे शिवाजी को तत्काल उससे दो-दो हाथ करने के लिए राजगढ़ से चल देना चाहिए।

अब शिवाजी के बोलने की बारी थी। गंभीर स्वर में उन्होंने कहना प्रारम्भ किया- ''आप सबकी भावनाओं का मैं बड़ा आदर करता हूँ। आपने जो कुछ भी कहा उसमें स्वराज्य हित निहित है, आप की ही भांति मैं भी खान के अत्याचारों से दुःखी और क्रोधित हूँ। कभी-कभी अकेले में मैं भी आपे से बाहर हो जाता हूँ और तुरंत उस पर आक्रमण की सोचता हूं। परन्तु पुनः मुझे अपनी पूर्व निर्धारित योजना का ध्यान आता है। वर्तमान की वास्तविकताओं पर विचार करता हूं तो भी वही योजना उचित और लाभकारी लगती है।

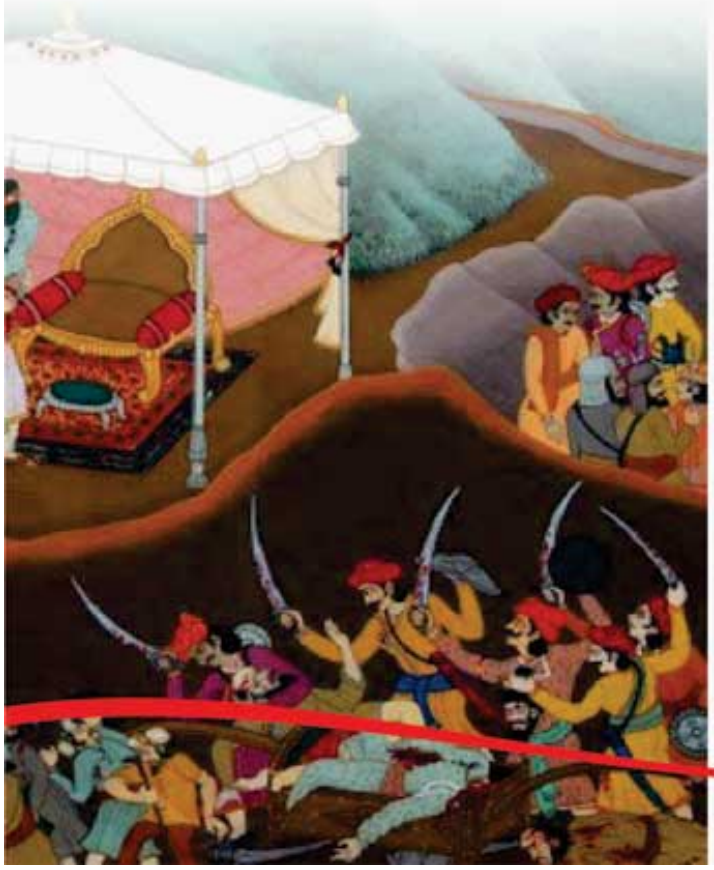

आप सब यह भलीं-भांति समझ लें कि खान का उद्देश्य है हमें मैदानी इलाके में उतार लेना और हमारा लक्ष्य है उसे पहाड़ी क्षेत्र तक घसीट कर ले आना। उसकी करतूतों पर क्रोधित हो, अपना विवेक खोना क्या उचित है? अब अधिक देर नहीं हैं। वह हमारी मांद की तरफ बढ़ता आ रहा है। यह हमारी नीति युद्ध की सफलता का परिचायक है। एक बार हमारी व्यूह-रचना में फंसा नहीं कि फिर अपनी सम्पूर्ण शाक्ति लगाने के बाद भी वह बच कर नहीं जा सकेगा। बस दो कदम और आगे कि जावली के भयानक वनों के बीच वह आ फसेगा। यहीं हम उसका शिकार करेंगे। यही वह क्षेत्र है जहां हमारी विजय और उसकी पूर्ण पराजय निश्चित है। आप अधीर न हों। थोड़े दिन और प्रतीक्षा करें। फिर देखना उसकी कैसी दुर्गति करेंगे।

अब हमारी अगली व्यूह रचना का केन्द्र प्रतापगढ़ होगा।''

सब मौन हो गये। आगे कोई नहीं बोला। सबकी शंकाओं के उत्तर मिल गये। सबको एक नई आशा ने अपने बाहुपाशों में बांध लिया।

शिवाजी राजगढ़ छोड़कर प्रतापगढ़ की ओर प्रस्थान कर गये।

उधर अफजल खाँ और आगे बढ़ा तथा वाई तक आ पहुंचा और डेरे डालकर जम गया। वहीं से उसके सरदार अपनी टुकडियों के साथ निकलते और शिवाजी के क्षेत्र में लूटपाट करते, मार-काट मचाते और वापिस अपने डेरों में चले जाते।

अफजल खाँ के अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ने लगे। किन्तु शिवाजी प्रतापगढ़ से हिले नहीं।

शिवाजी के गुप्तचरों ने अफवाहों का बाजार गर्म करना आरम्भ कर दिया।

''शिवाजी खान की सेनाओं से अत्यंत भयभीत है।''

'' डर के मारे वे दुर्ग से बाहर भी निकलने की हिम्मत नहीं कर पा रहे हैं।''

अपने विजयोन्माद में अंधा खान पहले ही बड़ा खुश था। इन खबरों को सुनकर तो फूला न समाया। घमण्ड में आकर बोला- ''इस शिवाजी के बच्चे की मेरे सामने औकात ही क्या है। आ गई न बच्चू की अक्ल ठिकाने। अकड़ा फिरता था। अब

शिवाजी को एक पत्र भी लिख भेजा। इसमें उसने उनसे अपने अपराध स्वीकार कर हथियार डालने का हुक्म दिया। साथ ही यह वायदा भी किया कि वह उन्हें बीजापुर सुल्तान से क्षमा दान दिलवाएगा। इसी पत्र में शिवाजी पर अनेक आरोप भी लगाये थे। राजपुरी, जावली, कल्याण, भिवण्डी आदि स्थानों पर अनधिकार कब्जा, राजाओं के चिह्नधारण करना, काजियों और मुल्लाओं को सताना आदि आरोप प्रमुख थे। उनके हितचिंतक के नाते उन्हें बार-बार अपनी शरण में आने का निमंत्रण खान ने दिया।

शिवाजी ने उसके पत्र की भलीभांति अध्ययन किया, विश्वस्त साथियों से सलाह-मशवरा किया और एक चतुर राजदूत के द्वारा अपना उत्तर लिख भेजा।

पत्र में खान की अत्याधिक प्रशंसा की गई। उसे एक पराक्रमी, श्रेष्ठ सरदार और गुणों का भण्डार कहा गया। शिवाजी ने उससे किसी प्रकार उनको बीजापुर से क्षमादान दिलाने की भी प्रार्थना की। भयभीत होने के कारण खान की शरण में पार तक पहुंचने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए, उसे जावली आने का आमंत्रण दिया जिससे वहां वे उसके चरणों में गिरकर अपराधों के लिए उससे क्षमा मांगी। और भविष्य में अच्छे व्यवहार का वचन दिया।

खान पत्र को पाकर हर्ष से फूला न समाया। अपने साथियों को पत्र दिखाते हुए डीगें मारने लगा-''चला था सिवराज बनने। अच्छा हुआ जल्दी ही तुझे अपनी औकात मालूम हो गई। अब मेरे वायदे पूरे होने में बहुत देर बाकी नहीं है। जावली तो जावली, तू कहे तो तेरे किले के भीतर आ जाऊं। कायर कहीं का। तेरे से मिलने तो मैं दोजख तक में आने को तैयार हूं।''

आखिर अफजल खाँ और शिवाजी प्रत्यक्ष भेंट का प्रस्ताव दोनों ही पक्षों द्वारा स्वीकार कर लिया गया। प्रतापगढ़ के नीचे के मैदान में भेंट होना निश्चित हुई।

अगले दिन अपनी सारी सेनाओं को उसने जावली की ओर प्रस्थान करने का हुक्म दिया। ऊंचे-नीचे, पहाड़ी प्रदेश से होकर यह मस्त हाथी चला जा रहा था। चलता-चलता थक जाता, विश्राम कर लेता फिर चल पड़ता। आखिर जावली पहुंकर छावनी डाल दी गई।

शिवाजी से अब नियमित रूप से पत्र व्यवहार चलने लगा। शिवाजी का हर पत्र यही प्रभाव छोड़ जाता कि मराठे अत्यंत भयभीत हैं। अफवाहें फैलाई गईं सो अलग।

भेंट-स्थल का निर्णय शिवाजी ने स्वयं अपनी देखरेख में कराया और शामियाने भी अपने मनपसंद लगवाये। प्रतापगढ़ दुर्ग के नीचे उत्तर पूर्व में एक बड़ा मैदान साफ कराया गया। एक-एक व्यवस्था शिवाजी ने स्वयं देखी। सारा मैदान एक साफ स्वच्छ घर के आंगन की तरह लगने लगा। बीचो-बीच एक बड़ा कीमती शामियाना लगाया गया। हीरे जवाहरातों की झालरें लटकाई गई और उसके अन्दर कीमती कालीन बिछा कर चन्दन की चौकियां सजाई गईं, जिन पर आरामदेह गद्दे और खूबसूरत तकिये रखे गए।

१० नवम्बर, १६५९। प्रतापगढ़ के प्रांगण में सन्नाटा छाया हुआ था। शिवाजी के सरदारों के मन आशंकाओं से आच्छादित थे। सुबह की ठंडी हवा में भी बैचेनी थी। प्रत्येक मराठा सैनिक की जबान पर एक ही वाक्य था- भगवान ही जाने आज क्या होगा।

बेचैन यदि कोई नहीं था, तो केवल शिवाजी। अन्य लोग अफजल खाँ के कारनामों की सुनसुनकर शिवाजी की सुरक्षा के बारे में आशंकित हो उठे थे। शिवाजी थे कि अत्यंत शान्त। वे अद्भुत आत्मविश्वास के साथ खान से मिलने जाने को तैयार खड़े थे। ''क्यों कान्होंजी! खान अपने डेरे 'पार' में डाले हैं न?'' महाराज ने मौन भंग करते हुए पूछा।

''हाँ महाराज! उसकी विशाल सेना से अपनी छावनी वहीं डाली है और शायद...''

भेंट के समय वे वहीं से अचानक हम पर टूट पड़ेंगे, यही न।'' शिवाजी ने कान्होजी की बात पूरी की।

''हाँ, आप ठीक कहते हैं, महाराज! परन्तु इस संबंध में तो हमने आपकी आज्ञानुसार पूर्ण प्रबंध कर लिया है। बाजी सर्जेराव ने अपने मन की बात कहने के उद्देश्य से बीच में टोका, ''लेकिन हमारे गुप्तचरों की सूचना के अनुसार खान बड़ा मक्कार और धोखेबाज है। हम सब आपकी सुरक्षा के संबंध में बड़े चिन्तित हैं। उससे आपका मिलने जाना ही हमें खतरनाक लगता है, महाराज।''

शिवाजी ने अपने सरदारों की आंखों में आंखें डालकर पूछा- ''क्या आपको मुझ से इतना व्यक्तिगत मोह हो गया है कि मेरी क्षमताओं में भी शंका होने लगी है? इस समय इतना ही समझ लो कि यदि उसने छल करने का प्रयत्न किया तो मैं उसको काल का कलेवा बनाकर ही सांस लूंगा। अभी भी विश्वास नहीं आ रहा हो, तो आओ मेरी उंगलियों को थोड़ा ध्यानपूर्वक देखो।''

सभी सरदार उनके बिल्कुल निकट आ गये। महाराज ने अपना बायां हाथ आगे बढ़ाकर उंगलियां खोल दीं। सब सन्न रह गए, मुस्कान ओठों पर और हृदय में गुदगुदी।

'बघनखा'।

शिवाजी ने अपने बायें हाथ में चमकती हीरे जवाहरात की अंगूठियों के नीचे तेज बघनखा पहना हुआ था। उसी तरह मखमल के अंगरखे के नीचे अभेद्य कवच और बाएं हाथ के बाजू में ही, छिपाई थी पैनी कटार बाहर से देखने पर लगता था बिल्कुल निरस्त्र है।

''अब तो आप आश्वस्त हैं मेरी सुरक्षा के संबंध में?'' शिवाजी ने उनसे पूछा।

''हाँ, महाराज'' सभी एक स्वर में कह उठे।

भेंट का समय निकट आता जा रहा था। थोड़ी देर मंत्रणा के बाद शिवाजी ने कुलदेवता का स्मरण किया और प्रतापगढ़ की सीढ़ियों पर आकर नीचे की ओर उतरने लगे। आँखों में निराली ही चमक थी और पैरों में असीम विश्वास।

उसी समय अफजल खां अपनी पालकी में बैठकर शामियाने की तरफ बढ़ा चला आ रहा था और शिवाजी थे कि अपने 'मेहमान' का 'सत्कार' करने पैदल ही सीढ़ी पर सीढ़ी उतरते चले जा रहे थे।

दुर्ग के नीचे टेढी–मेढी पगडंडियों से होती शिवाजी की दृष्टि अब केवल शामियाने पर जाकर टिक गई। कुछ ही क्षणों बाद खान से मुलाकात होगी। इतने रंगीन और शानदार शामियाने में मुलाकात भी कितनी शानदार ढंग से होगी।

सूरज की किरणों में शामियाना दमक रहा था। उससे भी अधिक दमक रहा था आत्मविश्वास भरा शिवाजी का चेहरा।

चलने से पूर्व उन्होंने निजी सुरक्षा की दृष्टि से पूरा प्रबंध कर लिया था, दुर्ग की रक्षा तथा प्रति–आक्रमण का ध्यान में रखकर उन्होंने अपने सरदारों को विस्तृत सूचनाएं दी थीं । उन्होंने कहा था– कन्होजी नाईक और बाजी सर्जेराव अपनी टुकड़ियों के साथ दुर्ग के चारों तरफ इस तरह बिखर जायेंगे कि खान के सैनिक दुर्ग अथवा भेंट स्थल की ओर बढ़ ही न सकें। नेताजी पालकर खान की छावनी के चारों तरफ मछियारे का जाल सा फैला देगा और दुर्ग से तोप दागने की आवाज सुनते ही आगे बढ़कर आक्रमण करना शुरु कर देगे। अब सीढ़ियां उतरते समय शिवाजी जानते थे हर पेड़, झाड़ी, गुफा और खोखर में मराठे वीर छिपे बैठे हैं– बस संकेत हुआ नहीं कि खान के सैनिकों की खैर नहीं।

इधर अफलजखाँ की पालकी शामियाने के द्वार पर पहुंची तो उसने अपने दूत कृष्णा जी भास्कर से कड़ककर पूछा– ''शिवाजी अभी तक नही आया? उसके आदमियों से कहो जल्दी करें।''

फिर उसने शामियाने की छत की ओर देखा। हीरे जवाहरातों की झालरें लटक रही थीं। जमीन पर कालीन बिछी थी तो वह भी हंस के पंखों सी कोमल। एक–एक चीज जगमगा रही थी। दाढ़ी पर हाथ फेरता खान बड़ी शान से मसनद पर जा बैठा और सोचने लगा–बस कुछ ही वक्त के बाद सब कुछ अपना होगा। गढ़ भी ओर ये हीरे जवाहारात भी। नहीं होगा दुनिया में अगर तो वह बद्जात काफिर शिवाजी।

''हुजूर, शिवाजी बहुत जल्द ही यहाँ पहुच रहा है। मैंने

गाँव के बच्चे

कविता : रमाशंकर 'चंचल'

खुले-खुले
उन्मुक्त जंगल में
उबड़-खाबड़
धरती पर
दौड़ रहे
नंगे-अधनंगे
मासूम भोले

हँसते-मुस्काते
कभी पेड़ों पर
चढ़ जाते थे
कभी उछालते
पानी नदी का
कभी खेलते
पत्थरों से

कभी बाँसुरी की
तान छेडते
ऐसे सुन्दर
प्यारे-प्यारे
मेरे गाँव के
बच्चे सारे।

• झाबुआ (म.प्र.)

उसके दूत से कह दिया है कि खान साहब और ज्यादा देर बाट नहीं देख सकते,'' कृष्णा जी भास्कर ने आकर सूचना दी।

''ठीक है। आये तो हमें बता देना।'' खान ने कृष्णा जी को चलता किया और अपने बायें बाजू की बांह का बटन खोलकर दायें हाथ से अपना दूसरा हाथ सहलाया तथा बटन फिर बन्द कर लिया। अंगरखे की बांह के नीचे छिपी उसकी कटार ने बाजू में खुजलाहट पैदा कर रही थी।

तभी शामियाने के उत्तरी द्वारा से तीस चालीस कदम दूर तैनात उसके १० सैनिक तनकर खड़े हो गये। दक्षिणी द्वार से थोड़ी दूरी पर शिवाजी के भी १० सैनिक आ पहुंचे।

शिवाजी शामियाने में प्रवेश कर रहे थे।

''आओ बेटा! आओ! डरो मत!'' कहता हुआ अफजल खाँ शिवाजी से मिलने को आगे बढ़ा, ''इस तरह कब तक भटकते रहोगे? कोई बात नहीं। मैं तुम्हें बीजापुर दिलवाऊंगा। आओ, मैं तुम्हें गले लगाने आया हूं।''

''खान साहेब! मैं जानता हूं आप मुझे किना प्यार करते हैं। मैं भी इसलिए आया हूं। ''शिवाजी ने आगे बढ़ते हुए कहा, ''मैं भी पहाड़ों में घूमते–घूमते तंग आ गया हूँ।''

दोनों एक दूसरे के आलिंगन में आ गये। विशालकाय खान और छोटे कद के शिवाजी। धीरे से खान ने बायें हाथ से शिवाजी की गर्दन पर अपनी पकड़ कसी और दायें हाथ से उनकी बगल में कटार का वार किया।

पर वार व्यर्थ गया। शिवाजी के कवच पर टकराकर कटार नीचे को फिसल गई। फिर त्वरित गति से उन्होंने अपनी गर्दन खान की जकड़ से छुड़ा ली और बायें हाथ का बघनखा उसके पेट में घुसेड़ दिया। जब तक वह जोर से चीखता उसकी आंतें बाहर निकल आई। खून का फव्वारा छूटने लगा और इसी बीच सिंह शावक की तरह उछलकर शिवाजी ने अपनी कटार उसके पेट में घोंप दी।

पेट पर हाथ रखे खान पुनः शिवाजी पर झपटा और साथ ही चीखा– ''दगा, दगा, मारो, पकड़ो'' और वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।

पलक झपकते ही सैयद बन्दा नामक खान का चतुर तलवार चलाने वाला सैनिक शिवाजी के निकट पहुंच गया और बड़े तीव्र आवेग से उसका वार शिवाजी की गर्दन की तरफ बढ़ा। शिवाजी एकदम नीचे बैठकर बायीं ओर को खिसक गए। तभी उनके अंगरक्षक जीवामहाले ने बिजली की गति से अपनी

तलवार के एक ही वार से सैयद बन्दे का हाथ कलाई से काट डाला। सैयद बन्दा की तलवार खनखनाती दूर फर्श पर जा पड़ी। बाहर खड़े खान के अन्य अंगरक्षकों को शिवाजी के दूसरे सैनिकों ने सम्भाल लिया।

दौड़कर शिवाजी शामियाने के बाहर पहुंचे और तीन अंगरक्षकों के साथ तीव्रगति से दुर्ग की ओर जाने वाली पगडंडी पर बढ़ चले।

इतनी देर में अफजल खाँ के कहार दौड़े–दौड़े शामियाने में पहुंचे और घायल को किसी प्रकार सहारा देकर पालकी में बैठाया। कहार पालकी उठाकर बाहर ही निकल पाये थे कि मराठा सैनिकों ने आगे बढ़कर उन पर आक्रमण कर दिया। एक ने तो पालकी में बैठे अफजल खाँ का सिर ही धड़ से काट डाला और कटे सिर को अपने भाले की नोंक पर टांगकर शिवाजी के पीछे–पीछे प्रतापगढ़ दुर्ग की सीढ़ियों पर चढ़ता चला गया।

महाराज के दुर्ग में पहुंचते ही मराठा सैना प्रसन्नता से नाच उठी। विजय सूचक तोप दागी गई और नगाड़े बजने लगे।

जगह–जगह छिपी मराठा सेना अफजल खाँ की छावनी पर टूट पड़ी। खान की सेना का मनोबल चकनाचूर हो गया। अफजल खाँ मारा गया। ''हम कहीं के न रहे। सुल्तान को क्या मुंह दिखायें?'' आदि वाक्य गुनगुनाते खान के सैनिक सिर पर पैर रखकर भागे।

भागे और भागते चले गये। इतने भयभीत हुए कि पेड़ों के हिलते पत्ते भी उन्हें खूंखार बघनखे नजर आते थे। ●

॥ बाल प्रस्तुति ॥

देवदूत

कहानी : सुप्रिया गौतम

मेरे घर में एक कामवाली आती है। वह ज्यादा पढी लिखी नहीं है। उसकी एक बेटी है चित्रा। उसकी उम्र १० वर्ष है। मेरी कामवाली अक्सर चित्रा को लोगों के घर काम करने भेजती है। चित्रा एक बार मेरे घर आती है उसके छोटे-छोटे हाथों में एक रंगों वाला पुराना-सा डिब्बा रहता है। उसमें अनेक रंग रहते हैं और एक कोरा कागज होता है। मैं चित्रा से पूछती हूँ चित्रा! ये रंग का डिब्बा और कागज लेकर आई हो।'' तो चित्रा कहती है ''दीदी! मैं एक चित्रकार बनना चाहती हूँ लेकिन मेरी माँ मुझे मना करती है।'' तो मैंने कहा- ''चित्रा, तुम प्रकृति का चित्र बनाओ। जिसमें अनेक वस्तुएँ व सम्पूर्ण प्रकृति का चित्रण हो'' उसने बिना ब्रश के अपनी अंगुलियों से अपने रंग की सहायता से उस कोरे कागज को रंगीन कर दिया और सम्पूर्ण प्रकृति को अपनी अंगुलियों से उस कागज में समाया। जब मैंने वह चित्र देखा तो मेरी आँखें अचंभित रह गई कि इन नन्हें हाथों में कैसा जादू हैं। इसमें कौन बसा है? मैं भी एक साधारण परिवार की लड़की थी इसलिए चित्रा की कला के लिए मैं कुछ नहीं कर पाई किन्तु मैंने उस चित्र को संभालकर रखा। कुछ समय पश्चात चित्रा के घर में विपदा आ पड़ी जिस कारण उसके घर में पैसों की जरूरत थी। चित्रा और उसकी माँ दर-दर भटके किंतु किसी ने उनकी सहायता नहीं की। तब मैंने कहा - ''चित्रा! एक उपाय है जिससे तुम्हें पैसे मिल सकते हैं।'' चित्रा ने बड़े खुश होकर पूछा- ''दीदी! क्या ?'' तो मैंने बोला- ''तुम्हारी चित्रकला से।'' चित्रा बोली ''दीदी कैसे?'' तो मैंने बोला कि ''तुम चित्र बनाकर उन्हें बेचो। जिससे तुम्हें पैसे मिलेंगे।'' चित्रा बोली ''लेकिन दीदी! चित्र बनाने के लिए सामग्री की जरूरत पड़ती है जो मेरे पास नहीं है। तो उस समय मेरे पास १००रु. थे जो मैंने अपने लिए बचाए थे वो मैंने चित्रा को दिए और बोला-मैं तो बस तेरी इतनी ही मदद कर सकती हूँ।'' उस १००रु. से चित्रा ने सामग्री खरीदी और एक बहुत सुंदर चित्र बनाया। चित्र ये साफ-साफ बयाँ कर रहा था कि उसमें एक पीड़ित माँ और दुखी बेटी की कहानी थी।'' उस चित्र को उसने अपने घर के बाहर लगा दिया। तभी वहाँ से एक पत्रकार निकली, जिसका नाम था 'अनुभूति'। अनुभूति ने उस चित्र को देखा और यह परख लिया कि ये चित्र किसी प्रतिभाशाली चित्रकार ने बनाया है। जब उसने पूछा'' ये किसने बनाया, किसने अपनी कला का अद्‌भुत प्रदर्शन किया।'' तो चित्रा ने कहा ''जी मैंने। अनुभूति को भरोसा नहीं हो रहा था कि इतनी छोटी बच्ची के नन्हें हाथों ने ये अद्‌भुत चित्र प्रस्तुत किया। उसने चित्रा से पूछा ''तुम्हारा यह हाल क्यों?'' चित्रा ने सारी कहानी बताई। अनुभूति को दुःख हुआ। उसने ठान लिया कि वह उसकी मदद करेगा। उसने चित्रा का चित्र अपने समाचार पत्र में छपवाया। यह चित्र समाचार पत्र में एक अन्य प्रसिद्ध चित्रकार ने देखा। जिसका नाम चित्रण था। उसका एक चित्रकला का बड़ा संस्थान था। उसको एक ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जो उसके संस्थान में चित्र बना सके और उसने चित्रा को इसके लिए उचित समझा।

चित्रण, चित्रा के पास गया और उसे संस्थान में चित्र बनाने को कहा।

चित्रा ने स्वीकार कर लिया और उस संस्थान के माध्यम से चित्रा को रोजगार तो मिला ही साथ- साथ उसकी कला भी उभरी और उसकी आवश्यकताएँ भी पूरी हो गई और उस संस्थान के माध्यम से चित्रा के चित्र पूरी दुनिया में फैल गए और वह एक प्रसिद्ध चित्रकार बन गई। आज जब भी वह अपनी सफलता के बारे में सोचती है तो उसे पत्रकार अनुभूति की याद आती है जो उसकी जिंदगी में एक देवी बनकर आई और उसे सफलता और ऊँचाई की ओर अग्रसर किया। चित्रा को उसकी चित्रकारी के लिए कई बड़े-बड़े पुरस्कार व सम्मान मिलते रहे और आज वह पूरी दुनिया में प्रसिद्ध चित्रकार है।

● जबलपुर (म.प्र.)

सीधी सी बात

चित्रकथा-
संकेत गोस्वामी

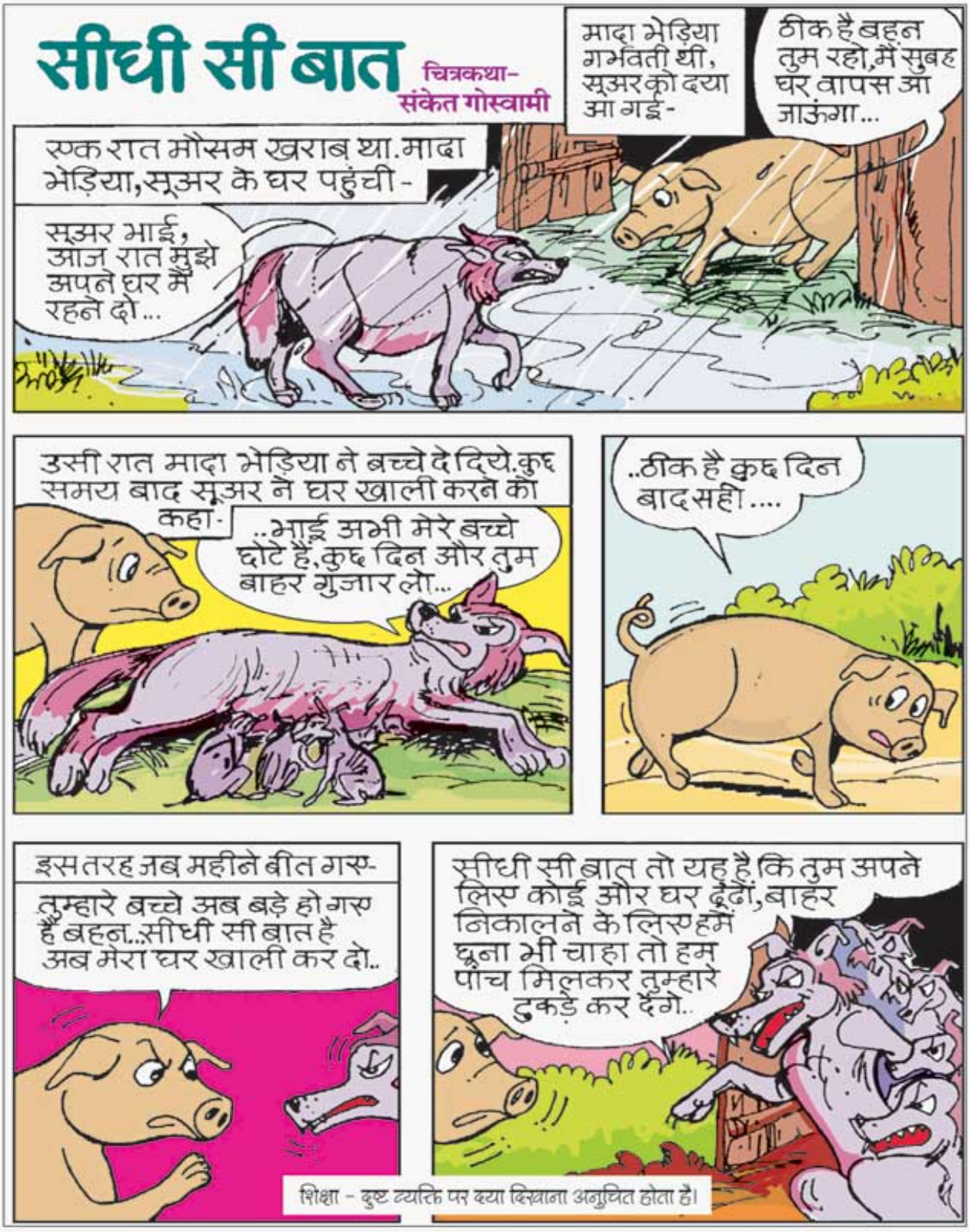

शिक्षा - दुष्ट व्यक्ति पर दया दिखाना अनुचित होता है।

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (५)

कथासत्र–४

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

बच्चे मानो रविवार की प्रतीक्षा में ही रहते हैं। शनिवार को जब स्कूल जा रहे थे तब माधव ने शंकर और मनोरमा से कहा– कल रविवार है न? नानाजी से कहानी सुनना है। कितनी सुन्दर–सुन्दर कहानियाँ सुनाते हैं नानाजी, बड़ा मजा आता है। उस दिन माँ नहीं आई थीं, घर पहुँचते ही मुझे पूछा, तो मैंने सारी कहानियाँ सुना दी। माँ ने कहा, अगले रविवार को मैं भी जाऊंगी। कल शाम को थोड़ा पहले आओगे।''

दूसरे दिन समय से पहले ही तीनों आम–वृक्ष के नीचे पहुँच गए। उस दिन दादाजी भी पहले पहुँचे। दादाजी को आते देख तीनों प्रफुल्लित होकर 'राम राम' कहने लगे। दादाजी भी जाते जाते 'राम राम कहते हुए' पहुँच गए। अपने आसन पर बैठते हुए कहा– आज कहाँ से शुरु करना, याद है क्या?

मनोरमा मानो प्रतीक्षा ही कर रही थी, झट से कह दी– शिवजी ने देवी सती का शव कँधे पर उठा लिया...

दादाजी– हाँ हाँ स्मरण हो गया। शव कँधे पर लेते हुए शिवजी उन्मत्त की भाँति घूमने लगे। शव धीरे–धीरे सड़कर नष्ट होते भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से उसके बावन टुकड़े कर दिए। सती देवी के शव के टुकड़े जहाँ –जहाँ गिरे थे वहाँ–वहाँ एक–एक शक्तिपीठ की सृष्टि हुई। वर्तमान गुवाहाटी में ब्रह्मपुत्र के किनारे पर स्थित नीलाचल पर्वत पर भी एक टुकड़ा गिरा, जिससे कामाख्या पीठ का सृजन हुआ था।

शंकर – उसके पश्चात् शिव जी ने क्या किया?

दादाजी – हाँ, बताता हूँ। कँधे पर शव जब समाप्त हो गया, तब शिवजी ब्रह्मपुत्र की उत्तरी तरफ एक छोटे से पर्वत पर ध्यानमग्न होकर तपस्या करने लगे। उनकी तपस्या यहाँ तक पहुंच गई कि संसार मानों काँपने लगा। उस समय सबसे डरपोक थे देवराज इन्द्र, उन्होंने सोचा कि तपोबल के माध्यम से शिवजी शायद उनका राज्य ही छीन लेंगे। शिवजी के तप भंग करने हेतु कामदेव नामक देवता को भेजा। कामदेव अनेक उपाय और अनेक दिन के प्रयास से शिवजी का तप भंग तो किया, परन्तु शिवजी की दृष्टि उन पर पड़ते ही वह

जलकर राख हो गए, क्योंकि उस समय शिवजी की तप शक्ति अग्नि की तरह भयानक हो रही थी। कामदेव की पत्नी का नाम था रति। उसने देखा कि पति शिवजी की तप शक्ति के अग्नि में जलकर राख हो गया तो तुरंत शिवजी के चरणों में स्तुति करने लगी। शिवजी का एक नाम है 'आशुतोष' अर्थात जल्दी संतोष या प्रसन्न होते हैं। रति की स्तुति भक्ति से प्रसन्न होकर कामदेव को पुनः जीवित कर दिया। जिस क्षेत्र में कामदेव पुनः रूप प्राप्त किया था उस पहाड़ के टीले पर अनेक प्रकार की मूर्तियाँ आज भी मौजूद है। जिसको पूर्व देश यानि पूर्वोत्तर का खजुराहो कहा जाता है। कामदेव पुनः रूप प्राप्त होने के कारण उस प्राप्त का नाम पड़ा कामरूप समझ गए हो न? और एक बात सुनो। करीब छः हजार वर्ष पहले मिथिला (वर्तमान बिहार के) से नरक नाम का युवक कई साथियों के साथ प्रागज्योतिषपुर जाकर वहाँ के किरात–वंशीय राजा घटक किरात को पराजित कर स्वयं राजा हुआ। उस समय से प्राग्ज्योतिषपुर आर्यों का बोलबाला हो गया।

तीनों – समझ गए, समझ गए, कितनी मजे की बात है।

दादाजी– हाँ, पहले कामरूप नाम का एक बड़ा जिला था। उस जिले के चार भाग करके बाँट दिया गया। उसमें दो जिले एक कामरूप (महानगर) और दूसरा कामरूप (ग्रामीण)। कामरूप महानगर में **कामाख्या** है और कामरूप ग्राम में है **मदन कामदेव**।

माधव – नानाजी ! वर्तमान उस राज्य का नाम असम हुआ क्यों?

दादाजी – हाँ ये भी एक रोचक कथा है। इसके लिए भी समय लगेगा। आज समय हो रहा है न? उस प्रांत का नाम असम कैसे हुआ आगे के सत्र में हम चर्चा करेंगे। अब राम–राम...।

बच्चे – राम–राम...

(निरंतर आगामी अंक में)

● **ब्रह्मसत्र तेतेलिया, गुवाहाटी (असम)**

शिशु गीत

गीत : अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

एक
काली बिल्ली-नीली आँखें
मूंहें बड़ी-बड़ी
एक रात वह बीच राह
गुड़िया को मिली खड़ी,
गुड़िया भागी जान बचा
उसको समझ चुहैल
तब तक भैया बोल पड़ा
देखो बिल्ली गैल।

दो
हाथी दादा अक्कड़-बक्कड़
पत्ता लक्कड़ खाते हो
फिर भी इतनी अच्छी सेहत
शक्ति कहाँ से पाते हो।
हाथी दादा बात राज की,
क्यों तुम नहीं बताते हो?
बूढ़े हो जाते हो फिर भी
चश्मा नहीं लगाते हो।

तीन
बिल्ली को एक और दिखाई
पड़ गई बिल्ली दर्पण में
इस बिल्ली को दूर भगाऊँ
ठान लिया उसने मन में।
दिया झपट्टा मार
एक से दर्पण हुआ अनेक
देख बिल्लियाँ अनगिन, भागी
मौसी तो थी एक।

● बलिया (उ.प्र.)

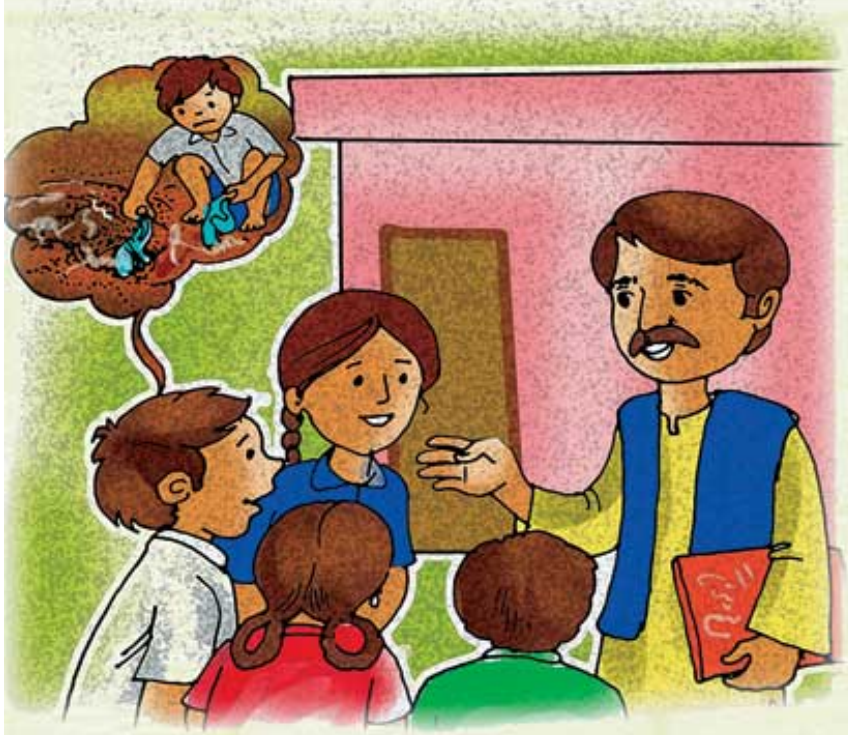

॥ बाल प्रस्तुति ॥

दोस्तों की पहल

कहानी : नवीन कुमार जैन

राजू, गुड़िया, मोनिका और मोनू इन चारों की आपस में गहरी मित्रता थी। चारों ही मित्र प्रतिदिन अपने अन्य सहपाठियों के साथ विद्यालय जाते थे। एक दिन मास्टर जी ने बच्चों को पर्यावरण संरक्षण का पाठ पढाया, इन चारों ने भी पढ़ा। चारों ही बच्चे रोज की तरह शाम को बगीचे में बैठे थे पर आज वे खेल नहीं रहे थे। आज तो उनके मन में मास्टर जी की बताई बातें चल रही थी लेकिन सबसे शरारती राजू मिट्टी कुरेद रहा था उसने मिट्टी कुरेदते–कुरेदते वहाँ छोटा सा गड्ढा कर दिया गड्ढे में उसने पॉलीथीन का कुछ भाग देखा उसने उसे खींच कर निकाल लिया तो वहाँ से एक पॉलिथीन निकली। उसने अपने सभी मित्रों को पॉलीथीन के बारे में बताया। सभी आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने सोचा कि हम जो भी इधर–उधर फेंकते हैं वह यूँ ही धरती में रह जाता हैं, इतने में राजू बोला मैंने कल अपने घर के पास लगे नीम के पेड़ के नीचे केले के छिलके फेंके थे, चलो उन्हें देखते हैं। सभी उत्सुकतावश राजू के घर के पास नीम के पेड़ के नीचे एकत्र हुए और थोड़ा–थोड़ा खोदना प्रारंभ किया पर उन्हें केले के छिलके नहीं मिले। दूसरे दिन वे विद्यालय गए उन्होंने मास्टर जी को ये बात बताई तो मास्टर जी ने उनको समझाया कि बच्चो! पॉलिथीन का प्रयोग पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक है यदि हम इसे यूँ ही कहीं फेंक देते हैं जैसे मिट्टी में या कहीं भी तो यह सैकड़ों वर्षों तक नष्ट नहीं होती और मृदा को भी प्रदूषित कर अनुपजाऊ बनाती जाती है और अगर हम इसे जला दें तो इससे वायु प्रदूषण होता है जिसके कारण हमें श्वांस संबंधी एवं अन्य बीमारियाँ हो सकती हैं। केले के छिलके या अन्य जैविक अपशिष्ट आसानी से मिट्टी में नष्ट हो जाते हैं, खाद का निर्माण भी करते हैं इससे मृदा की उपजाऊ क्षमता बढ़ जाती है। मास्टर जी ने उन्हें और भी बहुत सी बातें बताईं। राजू, गड़िया, मोनिका और मोनू को ये जानकर बहुत दुःख हुआ कि हमारे पॉलीथीन का प्रयोग करने से पर्यावरण को क्षति पहुँचती है पर फिर भी हम इसका उपयोग करते हैं। उन्होंने एक योजना बनाकर काम किया। कागज के गत्तों, जूट और फूलों की पत्तियों आदि से आकर्षक थैले बनाए और उन थैलों को अपने गाँव के प्रत्येक घर पर मुफ्त में बाँटा और बताया कि पॉलीथीन पर्यावरण के लिए नुकसानदायक है हमें इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। सभी ग्रामवासियों ने उसी दिन से कागज या जूट से बने थैलों का प्रयोग करने का संकल्प लिया। और इस अच्छा कार्य मे लिए राजू, गुड़िया, मोनिका और मोनू की न सिर्फ प्रशंसा की बल्कि उन्हें सम्मानित भी किया।

● बड़ा मलहरा (म.प्र.)

पुस्तक परिचय

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार **श्री रामगोपाल राही** की महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ

हम भारत के बालक - ५२ बाल कविताओं का नए-नए विविध विषयों पर सुन्दर रेखाचित्रों से सज्जित कविता संग्रह। **प्रकाशक : साहित्यागार प्रकाशन धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)**

बोलो चन्दा मामा -९१ बाल कविताओं की विषय विविधता के साथ रोचक प्रस्तुति एवं सुन्दर रेखाचित्रों से सज्जित संग्रह।
प्रकाशक : साहित्यागार प्रकाशन धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर (राज.)

वरिष्ठ बाल साहित्यकार **श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'** की दो काव्य कृतियाँ

पर्यावरणीय बाल कविताएँ - पर्यावरण सहित ऋतु, पर्व, पशु-पक्षी, प्रकृति आदि पर ४७ सरस कविताएँ।
प्रकाशक : नमिता प्रकाशन, श्यामविहार कालोनी, ११७ आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ २२६०२२ (उ.प्र.)

बाल विज्ञान कविताएँ -वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सम्मत, रोचक मनोरंजक ३५ विज्ञान कविताएँ।
प्रकाशक : नमिता प्रकाशन, श्यामविहार कालोनी, ११७ आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ २२६०२२ (उ.प्र.)

हम आजाद रहेंगे -शीर्षस्थ बाल साहित्यकार **डॉ. चक्रधर नलिन** द्वारा रचित ३० बाल कविताएँ जिनमें राष्ट्रभक्ति के स्वर तो प्रमुखता मुखरित है ही अन्य अनेक विषयों का भी सुन्दर वर्णन हुआ है।
प्रकाशक : चित्रा प्रकाशन, आकोला, जिला चित्तौड़गढ़ ३१२२०५ (राज.)

बंदर मामा - श्री सदाशिव कौतुक की ४७ महत्वपूर्ण बाल कविताएँ जिनमें से अनेक का नायक है बच्चों का प्रिय पात्र बन्दर।
प्रकाशक : साहित्य संगम 'श्रमफल' १५२० सुदामा नगर, सेक्टर डी, इन्दौर-९ (म.प्र.)

स्वर्णिम सन्देश -बाल साहित्यकार डॉ. सवित्री जगदीश की ४५ पद्यकथाएँ अर्थात् कविता में कहानी
प्रकाशक : संदर्भ प्रकाशन, जे-१५४, हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल (म.प्र.)

वीरव्रती आजाद - क्रांतिकारियों पर अनेक खण्ड एवं प्रबंध काव्यों के सर्जक श्री छोटेलाल पाण्डेय का नवीन प्रबंध काव्य।
प्रकाशक : अंशिका पब्लिकेशन विश्वविद्यालय जिला इलाहाबाद (उ.प्र.)

हाथ की करामात

कहानी : शंकरलाल माहेश्वरी

बच्चो ! प्रस्तुत कथा में हाथ से सम्बन्धित कई मुहावरों/लोकोक्तियाँ का रोचक ढंग से प्रयोग हुआ है। उन्हें पृथक से लिख कर उनका अर्थ जानिए और उचित प्रयोग कर अपनी भाषा को समृद्ध कीजिए। – सम्पादक

हाथरस के हाथीराम अचानक ही पक्षाघात से पीड़ित हो गये तभी घरवालों के हाथ पाँव फूल गए। उस समय हाथी राम का हाथ खाली होने से पड़ोसी हस्तीमल ने ही उसका हाथ थाम लिया उसे हाथोंहाथ इलाज के लिए शहर ले जाने की तैयारी कर ली। हाथी राम किसी के सामने हाथ भी नहीं पसारना चाहता था। जब रिश्तेदारों ने भी हाथ खींच लिए तो हस्तीमल ने ही उपचार का सारा प्रबंध किया। शहर के लिए प्रस्थान करने हेतु बस स्टैण्ड पर पहुँचे और जाती हुई बस को हाथ देकर रुकवाया। बस में बैठे और चल पड़े शहर के लिए।

उस समय हाथीराम की हालत को देखकर तो लोग कहने लगे कि यदि उचित उपचार नहीं मिला तो घरवाले हाथ मलते ही रह जायेंगे। वास्तव में हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाते तो जिंदगी से हाथ धोना पड़ता। शहर के बड़े डॉक्टर का इलाज चला तो हाथीराम स्वस्थ हो ही गये और अपने गाँव लौटने की तैयारी कर ली। बीमारी को देखते हुए तो एकाएक सभी के हाथ पैर ठण्डे पड़ गये। यदि हस्ती ने हाथ नहीं बढ़ाया होता तो हाथीराम जी हाथ से ही निकल जाते। इस समय हस्ती ने दाहिना हाथ बनकर पड़ोसी धर्म का निर्वाह किया।

शहर से लौटते समय बस में किसी ने हस्ती की जेब से हाथ साफ कर दिया तो उसके हाथों के तोते उड़ गए। यह तो होम करते ही हाथ जलने की कहावत चरितार्थ हो गई। उस समय पास में बैठे एक परिचित सहयात्री ने हस्ती का हौंसला बढ़ाते हुए कहा, दोस्त! मैं जानता हूँ कि पैसा तो तेरे हाथ का मैल है फिर तुम्हारा हाथ भर का कलेजा भी है। तुम किसी के हाथ बिके हुए भी नहीं हो। तुम्हारे हाथ की लकीरें बोलती हैं कि तुम जहाँ भी हाथ ड़ालते हो सोना उगलता है। यदि आदमी किसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए हाथ धोकर पीछे पड़ जाये तो क्या नहीं कर सकता?

अभी तो तुम्हें अपनी लड़की सुधा के हाथ भी पीले करने है। रवि को आगे पढ़ाना है। दिव्यांग अनुराधा का हाथ थाम कर तुमने जो उपकार किया है, इससे तो भगवान का हाथ भी तुम्हारे सिर पर है। तुमने हाथीराम का हाथ तंग होने पर जो उसकी मदद की है, इसके लिए परमात्मा तुम्हें सुखी रखेगा। आज हस्ती ने परोपकार किया है उससे वह सभी गाँव वालों के हाथ पर चढ़ गया। थोड़े दिनों बाद तो उसकी मेहनत रंग लाई। वह गाँव का अमीर आदमी बन गया। हाथ कंगन को आरसी क्या? आपने तो सब कुछ देखा ही है न? भगवान के घर तो इस हाथ ले और उस हाथ दे के सिद्धान्त के अनुसार कर्म का फल अवश्य मिलता ही है। हाथ पैर हिलाते रहो तो एक दिन हथेली पर सरसों भी जम सकती है। यह सच ही है कि दो अक्षर का 'लक' ढाई अक्षर का ' भाग्य' तीन अक्षर का ''नसीब'' साढे तीन अक्षर की ''किस्मत'' ये सभी चार अक्षर की ''मेहनत'' से छोटे होते है। वास्तव में हस्ती बाबू ने कठोर मेहनत करके इस उक्ति को सार्थक कर दिखाया ''अपना हाथ जगन्नाथ।''

● भीलवाड़ा (राज.)

प्रविष्टियां सादर आमंत्रित

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. परशुराम शुक्ल (भोपाल) द्वारा देवपुत्र के माध्यम से विषय केन्द्रित बाल साहित्य लेखन को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार' की स्थापना वर्ष २०१६ में की गई। गत वर्ष षड्ऋतुवर्णन (काव्य) विषय पर आमंत्रित रचनाओं में से चयनित रचनाएँ बाल साहित्य सृजनपीठ म.प्र. इन्दौर द्वारा पुस्तकाकार भी प्रकाशित की गई एवं सर्वश्रेष्ठ पांच रचनाकारों को सम्मान निधि भी प्रदान की गई।

वर्ष २०१७ के लिए यह पुरस्कार भारत के ग्राम्य जीवन में संरक्षित जीवन मूल्यों एवं सांस्कृतिक चेतना पर केन्द्रित बाल कहानियों के लिए निश्चित किया गया है। हमारा उद्देश्य बच्चों में अपने ग्रामीण भारतीयों के प्रति सम्मान एवं उनकी श्रेष्ठता का भाव जगाना है। ग्रामवासिनी **भारत माता के ग्राम्यगौरव** पर आपकी रचनाएँ (बाल कहानी) सादर आमंत्रित हैं वरिष्ठ रचनाकारों से भी विनम्र आग्रह है कि वे इस प्रयत्न को मात्र प्रतियोगिता या पुरस्कार के रूप में न देखकर इसके पीछे छुपे बृहद उद्देश्य को महत्व दें। पुरस्कार तो वस्तुतः नव साहित्यिकों के लिए प्रोत्साहन हेतु संयोजित है।

निवेदन :

- आपकी रचना **बाल कहानी** ही हो।
- वह अप्रकाशित, अप्रसारित मौलिक हो, इसे आप स्वयं प्रमाणित करके भेजें।
- रचना हिन्दी भाषा में हो। (अनूदित रचनाएं न भेजें।)
- रचना हमें ३० जनवरी २०१८ तक अवश्य प्राप्त हो।
- लिफाफे पर 'डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०१७ हेतु' अवश्य लिखें, जिससे वे देवपुत्र को प्राप्त होने वाली अन्य रचनाओं से पृथक की जा सकें।
- रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार देवपुत्र को होगा। पृथक किसी विशेषांक या स्वतंत्र पुस्तक के रूप में भी संभव है। प्रकाशित रचनाकारों को प्रकाशित कृति निशुल्क प्रदान की जावेगी।
- सर्वश्रेष्ठ ५ रचनाकारों को क्रमशः १५००/-,१२००/-, १०००/- एवं ५००/- रूपए के दो प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाएंगे।
- निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

रचनाएं ४० संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.) के पते पर भेजिए।

चुहिया की बिदाई

कविता : डॉ. कैलाश 'सुमन'

चूहा मामा पहन-पजामा,
पहुंच गया ससुराल।
मेरी चुहिया को सासू-माँ,
बिदा करो तत्काल।।

सास ससुर बोले चूहे से,
जल्दी नहीं मचाओ।
अभी उमर बिटिया की छोटी,
बापस घर को जाओ।।

चूहा था उदण्ड बात-ना,
उसने उनकी मानी।
बहुत किया उत्पात,
ससुर की कर दी खेंचातानी।।

तभी इकट्ठा हुआ मुहल्ला,
सबने लट्ठ बजाये।
पूँछ दबाकर चूहा मामा,
बापस घर को आये।।

● मुरैना (म.प्र.)

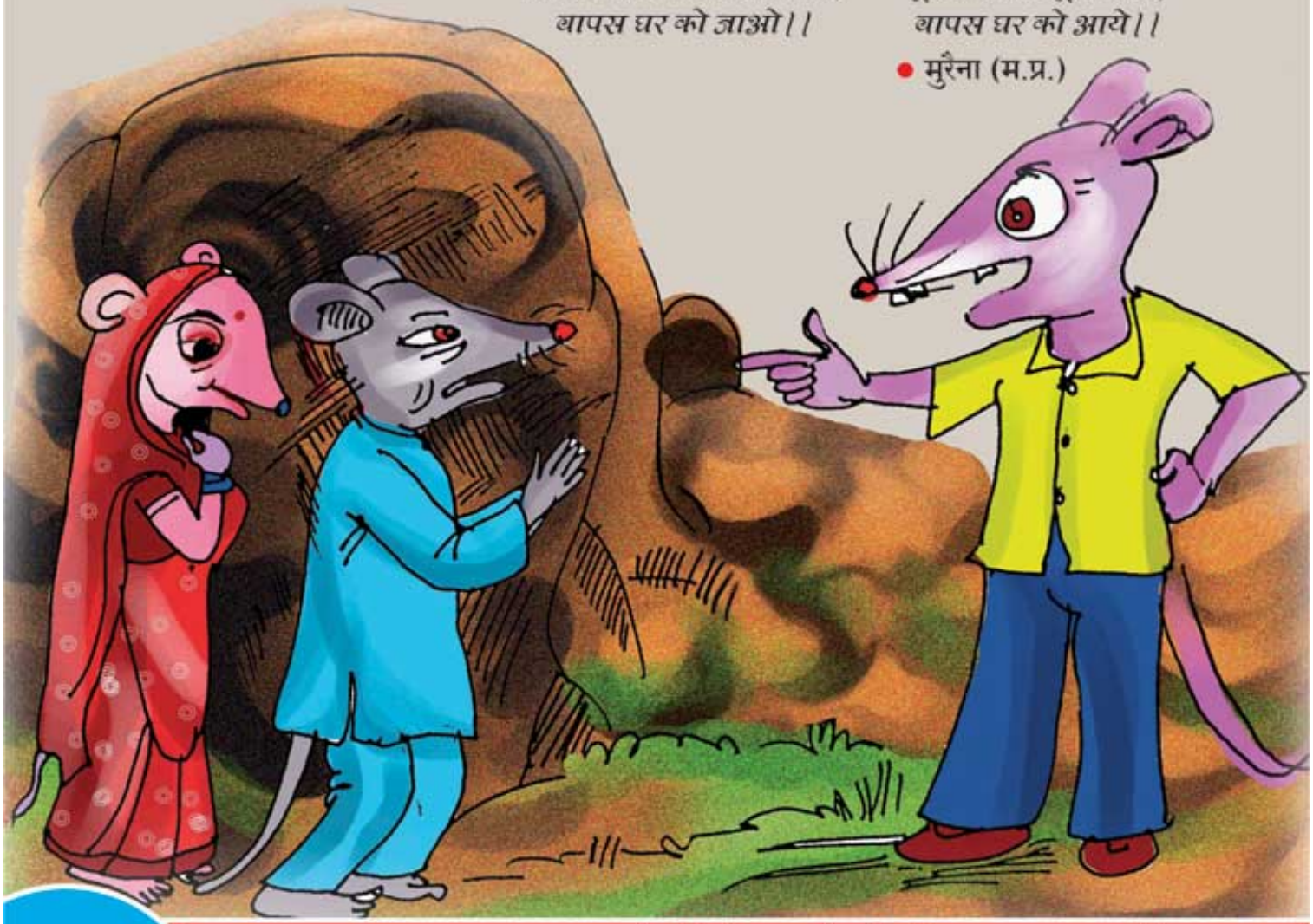

सही उत्तर

दिमागी कसरत

श्यामपट्ट, जमीन की ओर, एक भी नहीं, माँ, आपका नाम, रुपया/पत्र, गया, गया गया, दो केले लेके दो, सपना, आपका पैर।

संस्कृति प्रश्नमाला

पंचवटी, कृतवर्मा, रूस, जैसोर, चैत्र, उद्भाण्डपुर, बोधायन, गदरपार्टी, डूंग और जवार, गुरु हरिगोविन्द जी।

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०१७

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड सहित स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें। आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१८ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें–

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-

५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१७
देवपुत्र
४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

प्रविष्टियां आमंत्रित

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित **मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१७** वर्ष २०१६ में प्रकाशित **बाल कहानी की पुस्तक हेतु** प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियां **मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार** के नाम से **४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)** पर **३०, जनवरी २०१८** तक प्राप्त होना चाहिए। **पुरस्कार स्वरूप ५०००/- की राशि** प्रदान की जाती है।

बाल साहित्यकारों से प्रविष्टि स्वरूप कृतियां सादर आमंत्रित हैं।

– संपादक

एक नई बात

कहानी : पूनम पाण्डे

जय ने शाला से वापस लौटकर अपना बस्ता गणवेश वगैरह सभी चीजें लापरवाही से पटकने वाले अन्दाज में यहाँ वहाँ फैला दीं। माँ को बहुत अचम्भा हुआ। इन दिनों जय का व्यवहार कुछ अजीब तरह का ही होने लगा था। उसका पढ़ने–लिखने का अन्दाज भी कुछ ऐसा ही हो रहा था। ऐसा लगता था जैसे जय ने किसी भी काम को कायदे से करना बिलकुल बन्द ही कर दिया था।

माँ ने भी मन ही मन कुछ तय कर लिया था। वे रविवार को अवकाश के दिन जय को एक बगीचा दिखाने ले गईं। जय वैसे भी बगीचे के नाम से बहुत ही खुश हो जाया करता था। उसे फूलों के चित्र बनाना बहुत पसंद था। माँ ने आज जय से कुछ सवाल पूछ लिये उदाहरण के तौर पर फूल खिलने में समय क्यों लगा देते है? हड़बड़ी में सीधे खिलकर काम क्यों नहीं निबटा देते, पहले कली क्यों खिलती है? कांटों की जरूरत ही क्या है? वगैरह वगैरह। जय को यह सवाल बहुत मजेदार लगे। ऐसा इसलिए था क्योंकि ऐसे सवाल उसके विद्यालय में कभी भी किसी ने नहीं पूछे थे। जवाब में उसने अपनी अक्ल लगाकर अपनी माँ को सारे जवाब एक वाक्य में दे दिये कि जो प्रकृति है न वह अपना काम जल्दीबाजी की जगह एकाग्रता से, शांति से करती है। अनुशासन होने की वजह से ही पहले कली बनती है फिर फूल खिलता है। इसमें मौसम और जलवायु के साथ ताल–मेल भी बहुत खास भूमिका निभाता है।

इतना कहकर जय चुप हो गया, मगर माँ ने अवसर को फालतू नहीं जाने दिया। माँ ने एक और सवाल पूछ लिया कि अगर कोई प्यारा बच्चा अपना गृहकार्य ठीक से न करे अपना सामान बिखेर दे तो क्या होगा?

जय के मुँह से चट निकल पड़ा वह मेरे जैसा हो जाएगा। आजकल मैं बहुत ही लापरवाह हो गया हूँ।'' कहकर जय मुस्कुरा उठा वह समझ गया था कि उसको क्या करना है। माँ उसका जवाब सुनकर संतुष्ट हो गईं। उस दिन जब माँ उसके साथ घर वापस आईं तो चन्द मिनटों में जय ने अपनी पढाई की मेज व्यस्थित कर ली। माँ मन ही मन जय की समझदारी पर प्रसन्न हो गईं। उस दिन के बाद जय का कोई सामान कभी भी बिखरा नहीं रहा।

● अजमेर (राज.)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

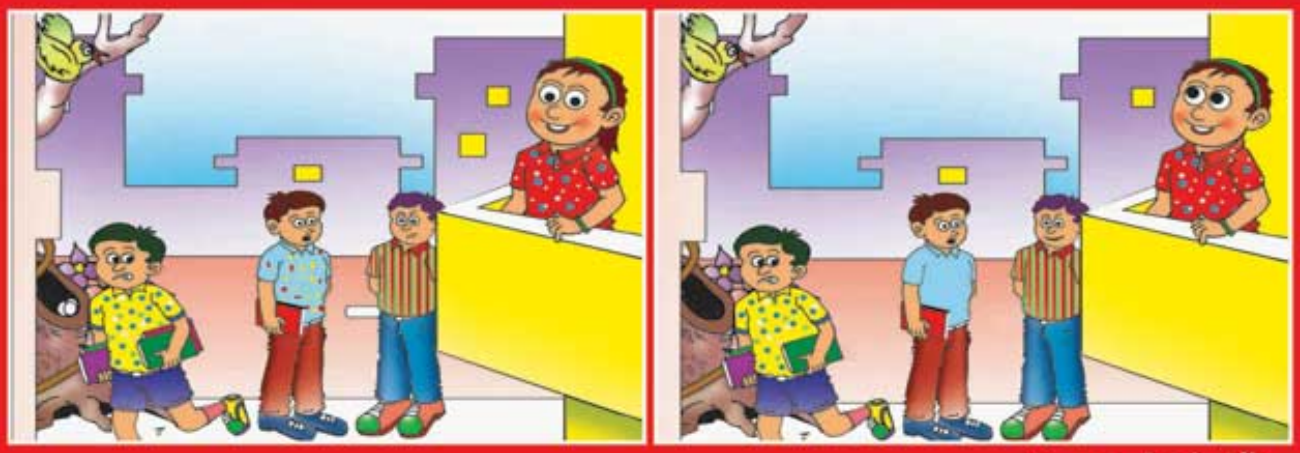

(उत्तर इसी अंक में)

।। बाल प्रस्तुति ।।

चलो चांद पर

कहानी : आयुष शुक्ला

एक बार हम पंख लगाकर,
चंदा पर जाते उड़ते।
वहाँ बैठकर खूब खेलते,
पढ़ते बातें करते।।

• रहली (म.प्र.)

सही उत्तर

बड़े से छोटा

६, ७, ५, ४, २,
८, ९, ३, १०, १

पैनी नजर

•

२१ त्रिभुज

•

२ एवं ५

जेब खर्च

चित्रकथा - देवांशु वत्स

|| बाल प्रस्तुति ||

प्यारी माँ

कविता : कृष्णगोपाल सिंह ठाकुर

मेरी माँ है कितनी प्यारी,
सारे जग में लगती न्यारी।
रोज सबेरे मुझे जगाती,
मेरे साथ टहलने जाती।

● ग्वालियर (म.प्र.)

आपकी पाती

सर्वप्रथम आपको व देवपुत्र परिवार को 'प. दीनदयाल उपाध्याय जन्मशताब्दी वर्ष' पर निरन्तर बाल व किशोर उपयोगी साहित्य प्रकाशन के लिए विशेष रूप से धन्यवाद। डॉ. वेदमित्र जी की महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग से जुड़ें विषय बाल सुलभ भाषा में प्रस्तुत करना अति सराहनीय कार्य है।

इसके अतिरिक्त अन्य नियमित स्तम्भ जैसे हमारे राज्यपुष्प, जीवनशैली आदि भी अति उपयोगी है।

आज के समय में बच्चों से जुड़े संस्कारवान विषयों पर आप देवपुत्र परिवार का श्रम अत्यंत स्वागत योग्य हैं।

● मनीष जैन, भोपाल (म.प्र.)

देवपुत्र है सच्ची मित्र।
उत्तम बातें, अनुपम चित्र।।
खूब कराती, दिमागी कसरत।
पूँछ-पूँछ कर, प्रश्न विचित्र।।
तन-मन की महकाती है।
संस्कार का, छिड़क के इत्र।।
कविता, कथा व अपनी बात से।
बच्चों में, गढ़ती है चरित्र।।
दोष-बुराई से, रखती दूर।
भगवाध्वज सी, परम पवित्र।।

● मृगेन्द्र श्रीवास्तव, पाण्डव नगर (म.प्र.)

रंग भरें

• राजेश गुजर

चुटकुले

डाक्टर : आज कैसी तबियत है आपकी पत्नी की?
पति : ठीक है, आज तो थोड़ा लड़ी भी है।

****

अधिकारी ने चुटकुला सुनाया। सभी हंसने लगे, बस एक कर्मचारी नहीं हंसा।
अधिकारी ने पूछा: तुम्हें मेरा चुटकुला पसंद नहीं आया।
कर्मचारी : श्रीमान! मुझे दूसरी नौकरी मिल गई है।

****

पत्नी: शादी के इतने साल बाद भी तुमने मुझे कुछ नहीं दिया।
पति: क्या चाहिए तुम्हें?
पत्नी : कोई सोने की चीज दिलाओ।
पति : ठीक है। नया तकिया ला दूंगा। आराम से सोना।

****

टीचर: १४ फलों के नाम बताओ
नीटू: आम
टीचर : शाबाश
नीटू: अमरूद
टीचर : बहुत अच्छा। दो हो गए, बाकी १२ और बताओ।
नीटू: १ दर्जन केले।

****

पति: मुन्ना कब से रो रहा है। इसे लोरी सुनाकर सुला क्यों नहीं देती?
पत्नी: लोरी सुनाती है तो पड़ोसी कहते हैं कि भाभीजी इससे अच्छा तो मुन्ने को ही रोने दो।

****

बीवी रसगुल्ले खा रही थी।
पति: मुझे भी टेस्ट कराओ।
बीवी ने एक रसगुल्ला दे दिया।
पति: बस एक
बीवी : हाँ, बाकी सबका भी ऐसा ही स्वाद है।

सही उत्तर

बुद्धि की परख

सींग हिरण के, मुँह घोड़े का, गर्दन जिराफ की, धड़ जेबरे का, पैर ऊंट के, पूंछ बिल्ली की।

अन्तर बताओ

(१) लड़की दूसरी तरफ देख रही है। (२) उसके बाल में अंतर है। (३) दूर मकान में कम खिड़कियाँ है। (४) किताब वाले लड़के की कमीज में अंतर है। (५) दौड़ते लड़के की किताबें कम हैं। (६) अंडे गायब हैं। (७) खड़े लड़के के हाथ का पेपर गायब है। (८) वह हंस भी रहा है।

मोबाईल का ठसका

कविता : ओम उपाध्याय

गाँव शहर, कस्बे
जैसे ही वन में
रेडियो के बाद
टी.वी. आया
और फिर
मोबाईल ने
जाल फैलाया।
शेर बन्दर
भालू लोमड़ी
सब की व्यस्त
कान संग खोपड़ी।
भूल गए सब
मारा-मारी
मोबाईल की थी
ऐसी यारी।
मोबाईल ।
लगा था चस्का
जिसका था ऐसा ठसका
रोक पाना जिसे
नहीं किसी के
बस का।

● इन्दौर (म.प्र.)

एक राष्ट्र एक कर

व्यवसायियों को होने वाले लाभ

- निर्माता सहित 75 लाख से कम वार्षिक विक्रय वालों को कम्पोजिशन की सुविधा।
- एक देश, एक कर और एक बाजार। एक समान कर प्रणाली।
- ऑनलाइन कर प्रणाली से होगी सहुलियत
- कश्मीर से कन्याकुमारी तक चुंगी नाके समाप्त ।
- रोजमर्रा की वस्तुएं होंगी सस्ती, उपभोक्ता की क्रय शक्ति में होगा इजाफा।
- 16 करों के स्थान पर सिर्फ एक जीएसटी
- कर प्रक्रिया बेहद सरल, पारदर्शी एवं एकीकृत।
- बाधारहित इनपुट टैक्स की सुविधा।

आम उपभोक्ता को लाभ

- निर्यात बढ़ने से नए उद्योग लगेंगे और युवाओं को रोजगार प्राप्त होगा।
- नकली वस्तुओं का क्रय-विक्रय समाप्त होगा।
- उत्पादन की लागत कम होने से उपभोक्ताओं को होगा लाभ।
- आम जनता को भी दोहरे कर से मिलेगी मुक्ति
- कर प्रणाली का सीधा लाभ जनता को।

व्यवसायियों से अपेक्षा

- व्यवसायी पंजीयन की जानकारी जी.एस.टी.एन. में माइग्रेट कर जी.एस.टी. पंजीयन प्राप्त करें।
- पंजीयन माइग्रेट ना करने पर व्यवसाय को नुकसान हो सकता है।
- वाणिज्यिक कर कार्यालयों में संचालित हेल्प-डेस्क से सहयोग प्राप्त करें। या फिर टोल फ्री नंबर 1800-2335-382 पर कॉल करें।
- वैट की अंतिम 2 रिटर्न फाइल करने पर आई.टी.सी. का लाभ।

R.O. No. 62318/3

Credible Chhattisgarh

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१५-२०१७ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

नन्दानगर सहकारी साख संस्था मर्यादित, इन्दौर

पंजीकृत कार्यालय : सहकार भवन 39/1 नन्दानगर मेनरोड़, इन्दौर दूरभाष नं. (0731) 2550879, 2551276

वर्तमान में प्रचलित अमानत योजनाओं पर ब्याज दर

मियादी अमानत

अवधि	दर
15 से 45 दिन तक	4%
46 से 180 दिन तक	5%
181 से 365 दिन तक	6%
1 से 2 वर्ष तक	7.5%
2 वर्ष से अधिक	7%

अन्य अमानतों पर ब्याज दर

खाते का प्रकार	दर
सेव्हिंग खातों पर	4%
अनिवार्य अमानत पर	5%

ऋण पर ब्याज की दरें

ऋण का प्रकार	दर
स्वयं जमानती कर्ज	11%
जमानती कर्ज	11%

टर्म लोन (अवधि ऋण)

ऋण की सीमा	दर
5 लाख तक	11%
5 से 25 लाख	12%
25 से 50 लाख तक	13%
50 लाख से उपर	14%

रजत कमल समृद्धि योजना

अवधि	दर
1001 दिन हेतु	7.5%

मकान तारण कर्ज

ऋण की सीमा	दर
5 लाख तक	11% त्रैमासिक
5 से 10 लाख	12%
10 से 50 लाख	13%
50 लाख से उपर	15%

आवास ऋण

ऋण की सीमा	दर
5 लाख तक	8.5%
5 से 10 लाख तक	9%
10 से 25 लाख तक	9.5%
25 से 50 लाख तक	10%
50 लाख से उपर	10.5%

वाहन ऋण

ऋण का प्रकार	दर
घरेलू उपयोग हेतु	12%
व्यवसायिक उपयोग हेतु	14%

- वरिष्ठ नागरिकों को 0.5 % अतिरिक्त ब्याज दिया जावेगा .
- सदस्य के द्वारा कर्ज किश्त का नियमीत भुगतान करने पर ब्याज पर 20% की दर से रिबेट दिया जायेगा.
- सभी प्रकार के सदस्य के कर्ज खातें में त्रैमासिक पर निर्धारित दर से ब्याज की गणना कर ब्याज राशि का नामें किया जावेगा .

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित प्रधान सम्पादक – कृष्णकुमार अष्ठाना